दिसम्बर 2024

एकता का महाकुम्भ

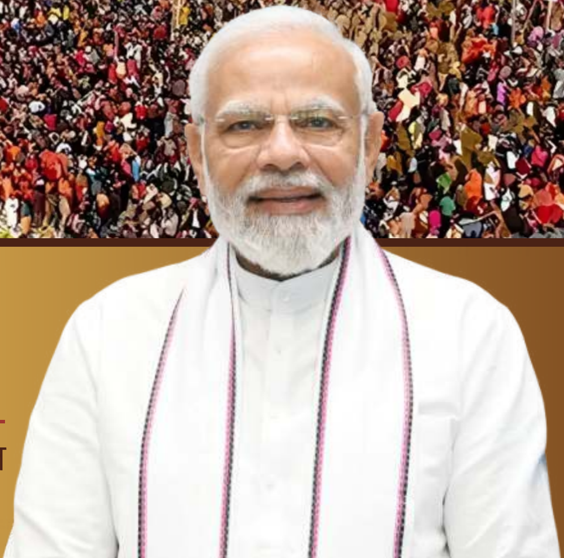

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 भारत के संविधान की यात्रा 16

2.2 **महाकुम्भ :** युगों से आस्था और विरासत की यात्रा 24

2.3 **भारत की क्रिएटिव इंडस्ट्री :** अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय गौरव को नया आयाम 32

2.4 **बस्तर ओलम्पिक 2024 :** शांति, प्रगति और एकता की जीत 42

03 संक्षेप में

3.1 75 वर्ष संविधान के 20

3.2 **परम्परा और प्रौद्योगिकी एक साथ :** डिजिटल महाकुम्भ और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस 28

3.3 KTB: एनीमेशन के ज़रिए स्वतंत्रता संग्राम के नायकों का सम्मान 38

3.4 सिनेमाई हस्तियों को उनकी 100वीं जयंती पर श्रद्धांजलि 40

3.5 बस्तर ओलम्पिक : खेलेगा भारत, जीतेगा भारत! 46

3.6 विदेशों में भारत की सांस्कृतिक छाप 50

3.7 मलेरिया उन्मूलन : भारत की स्वास्थ्य यात्रा में मील का पत्थर 52

3.8 सब्जियों के उत्पादन से कालाहांडी में बदलाव 54

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 1950 से 2025 : संविधान लोकतंत्र की दूरदर्शिता और दृढ़ता का वसीयतनामा किरेन रिजिजू 22

4.2 वेव्स समिट : रचनात्मकता का तकनीकी नवाचार से मिलन - शेखर कपूर 36

4.3 सभी के लिए स्वास्थ्य : आयुष्मान भारत से बदलता जीवन - डॉ. सी.एस. प्रमेश 48

05 प्रतिक्रियाएँ 57

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

2025, बस अब तो आ ही गया है, दरवाज़े पर दस्तक दे ही रहा है। **2025 में 26 जनवरी को हमारे संविधान को लागू हुए 75 वर्ष होने जा रहे हैं। हम सभी के लिए बहुत गौरव की बात है। हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें जो संविधान सौंपा है, वो समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है। संविधान हमारे लिए guiding light है, हमारा मार्गदर्शक है। ये भारत का संविधान ही है, जिसकी वजह से मैं आज यहाँ हूँ, आपसे बात कर पा रहा हूँ।** इस साल 26 नवम्बर को संविधान दिवस से एक साल तक चलने वाली कई activities शुरू हुई हैं। **देश के नागरिकों को संविधान की विरासत**

महाकुम्भ का संदेश एक हो पूरा देश

से जोड़ने के लिए constitution75.com नाम से एक खास website भी बनाई गई है। इसमें आप संविधान की प्रस्तावना पढ़कर अपना video upload कर सकते हैं। अलग-अलग भाषाओं में संविधान पढ़ सकते हैं, संविधान के बारे में प्रश्न भी पूछ सकते हैं। **'मन की बात' के श्रोताओं से, स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों से, कॉलेज में जाने वाले युवाओं से, मेरा आग्रह है, इस website पर ज़रूर जाकर देखें, इसका हिस्सा बनें।**

साथियो, अगले महीने 13 तारीख से प्रयागराज में महाकुम्भ भी होने जा रहा है। इस समय वहाँ संगम तट पर जबरदस्त तैयारियाँ चल रही हैं। मुझे याद है, अभी कुछ दिन पहले जब मैं प्रयागराज गया था तो हेलिकॉप्टर से पूरा कुम्भ क्षेत्र देखकर दिल प्रसन्न हो गया था। इतना विशाल! इतना सुन्दर! इतनी भव्यता!

साथियो, महाकुम्भ की विशेषता केवल इसकी विशालता में ही नहीं है। कुम्भ की विशेषता इसकी विविधता में भी है। इस आयोजन में करोड़ों लोग एक साथ एकत्रित होते हैं। लाखों संत, हजारों परम्पराएँ, सैकड़ों सम्प्रदाय, अनेकों अखाड़े, हर कोई इस आयोजन का हिस्सा बनता है। कहीं कोई भेदभाव नहीं दिखता है, कोई बड़ा नहीं होता है, कोई छोटा नहीं होता है। अनेकता में एकता का ऐसा दृश्य विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा। इसलिए हमारा कुम्भ एकता का महाकुम्भ भी होता है। इस बार का महाकुम्भ भी एकता के महाकुम्भ के मंत्र को सशक्त करेगा। मैं आप सबसे कहूँगा, जब हम कुम्भ में शामिल हों, तो एकता के इस संकल्प को अपने साथ लेकर वापस आएँ। **हम समाज में विभाजन और विद्वेष के भाव को नष्ट करने का संकल्प भी लें। अगर कम शब्दों में मुझे कहना है तो मैं कहूँगा...**

महाकुम्भ का संदेश, एक हो पूरा देश।

दिव्य-भव्य-डिजिटल एकता का महाकुम्भ

महाकुम्भ का संदेश, एक हो पूरा देश।

और अगर दूसरे तरीके से कहना है तो मैं कहूँगा...

गंगा की अविरल धारा, न बँटे समाज हमारा।

गंगा की अविरल धारा, न बँटे समाज हमारा।

साथियो, इस बार प्रयागराज में देश और दुनिया के श्रद्धालु digital महाकुम्भ के भी साक्षी बनेंगे। Digital Navigation की मदद से आपको अलग-अलग घाट, मन्दिर, साधुओं के अखाड़ों तक पहुँचने का रास्ता मिलेगा। यही navigation system आपको parking तक पहुँचने में भी मदद करेगा। **पहली बार कुम्भ आयोजन में AI chatbot का प्रयोग होगा। AI chatbot के माध्यम से 11 भारतीय भाषाओं में कुम्भ से जुड़ी हर तरह की जानकारी हासिल की जा सकेगी। इस chatbot से कोई भी text type करके या बोलकर किसी भी तरह की मदद माँग सकता है। पूरा मेला क्षेत्र को AI-Powered cameras से cover किया जा रहा है।** कुम्भ में अगर कोई अपने परिचित से बिछड़ जाएगा तो इन कैमरों से उन्हें खोजने में भी मदद मिलेगी। श्रद्धालुओं को digital lost & found center की सुविधा भी मिलेगी। श्रद्धालुओं को मोबाइल पर government-approved tour packages, ठहरने की जगह और homestay के बारे में भी जानकारी दी जाएगी। **आप भी महाकुम्भ में जाएँ तो इन सुविधाओं का लाभ उठाएँ और हाँ #एकता का महाकुम्भ के साथ अपनी selfie ज़रूर upload करिएगा।**

साथियो, 'मन की बात' यानी MKB में अब बात KTB की, जो बड़े बुज़ुर्ग हैं, उनमें से, बहुत से लोगों को KTB के बारे में पता नहीं होगा, लेकिन जरा बच्चों से पूछिए KTB उनके बीच बहुत ही superhit है। KTB यानी कृष, तृष और बाल्टीबॉय। **आपको शायद पता होगा बच्चों की पसंदीदा animation series और उसका नाम है KTB – भारत हैं हम, और अब इसका दूसरा season भी आ गया है।** ये तीन animation character हमें भारतीय स्वतंत्रता

संग्राम के उन नायक-नायिकाओं के बारे में बताते हैं; जिनकी ज़्यादा चर्चा नहीं होती। हाल ही में इसका season-2 बड़े ही खास अंदाज में international Film Festival of india, Goa में launch हुआ। सबसे शानदार बात ये है कि ये series न सिर्फ भारत की कई भाषाओं में बल्कि विदेशी भाषाओं में भी प्रसारित होती है। इसे दूरदर्शन के साथ-साथ अन्य OTT platform पर भी देखा जा सकता है।

साथियो, हमारी animation फिल्मों की, regular फिल्मों की, टीवी serials की popularity दिखाती है कि भारत की creative industry में कितनी क्षमता है। यह industry न सिर्फ देश की प्रगति में बड़ा योगदान दे रही है, बल्कि हमारी economy को भी नई ऊँचाइयों पर ले जा रही है। हमारी Film & Entertainment industry बहुत विशाल है। **देश की कितनी ही भाषाओं में फिल्में बनती हैं, creative content बनता है। मैं अपनी film और entertainment industry को इसलिए भी बधाई देता हूँ क्योंकि उसने 'एक भारत – श्रेष्ठ भारत' के भाव को सशक्त किया है।**

साथियो, वर्ष 2024 में हम फिल्म जगत की कई महान हस्तियों की 100वीं जयंती मना रहे हैं। इन विभूतियों ने भारतीय सिनेमा को विश्व-स्तर पर पहचान दिलाई। राज कपूर जी ने फिल्मों के माध्यम से दुनिया को भारत की soft power से परिचित कराया। रफ़ी साहब की आवाज़ में वो जादू था, जो हर दिल को छू लेता था। उनकी आवाज़ अद्भुत थी। भक्ति गीत हों या romantic songs, दर्द भरे गाने हों, हर emotion को उन्होंने अपनी आवाज़ से जीवंत कर दिया। एक कलाकार के रूप में उनकी महानता का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि आज भी युवा-पीढ़ी उनके गानों को उतनी ही शिद्दत से सुनती है– यही तो है timeless art की पहचान। **अक्किनेनी नागेश्वर राव गारू ने तेलुगु सिनेमा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। उनकी फिल्मों ने भारतीय परम्पराओं और मूल्यों को बखूबी प्रस्तुत**

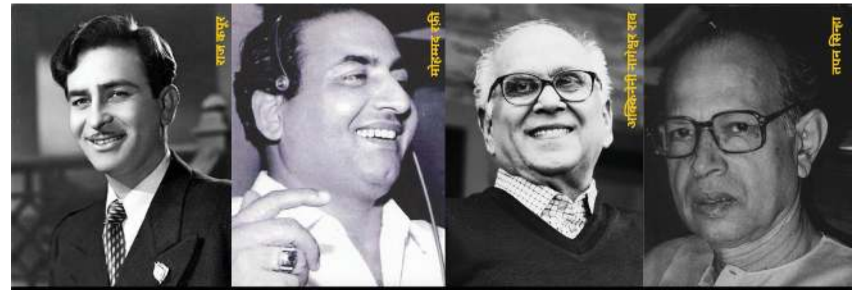

सिनेमा के दिग्गजों की शताब्दी का जश्न

किया। तपन सिन्हाजी की फिल्मों ने समाज को एक नई दृष्टि दी। उनकी फिल्मों में सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय एकता का संदेश रहता था। हमारी पूरी film industry के लिए इन हस्तियों का जीवन प्रेरणा जैसा है।

साथियो, मैं आपको एक और खुशखबरी देना चाहता हूँ। भारत की creative talent को दुनिया के सामने रखने का एक बहुत बड़ा अवसर आ रहा है। अगले साल हमारे देश में पहली बार World Audio Visual Entertainment Summit यानी WAVES summit का आयोजन होने वाला है। आप सभी ने दावोस के बारे में सुना होगा, जहाँ दुनिया के अर्थजगत के महारथी जुटते हैं। उसी तरह WAVES summit में दुनिया-भर के media और entertainment industry के दिग्गज, creative world के लोग भारत आएँगे। **यह summit भारत को global content creation का hub बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।** मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि इस summit की तैयारी में हमारे देश के young creators भी पूरे जोश से जुड़ रहे हैं। जब हम 5 trillion dollar economy की ओर बढ़ रहे हैं, तब हमारी creator economy एक नई energy ला रही है। **मैं भारत की पूरी entertainment और creative industry से आग्रह करूँगा– चाहे आप young creator हों या established artist, Bollywood**

www.wavesindia.org

‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत’ का सजीव प्रतिबिम्ब हमारी क्रिएटिव इंडस्ट्री

से जुड़े हों, या regional cinema से, TV industry के professional हों, या animation के expert, gaming से जुड़े हों या entertainment technology के innovator, आप सभी WAVES summit का हिस्सा बनें।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सभी जानते हैं कि भारतीय संस्कृति का प्रकाश आज कैसे दुनिया के कोने-कोने में फैल रहा है। आज मैं आपको तीन महाद्वीपों से ऐसे प्रयासों के बारे में बताऊँगा, जो हमारी सांस्कृतिक विरासत के वैश्विक विस्तार के गवाह है। ये सभी एक-दूसरे से मीलों दूर हैं, लेकिन भारत को जानने और हमारी संस्कृति से सीखने की उनकी ललक एक जैसी है।

साथियो, Paintings का संसार जितना रंगों से भरा होता है, उतना ही खूबसूरत होता है। आप में से जो लोग टीवी के माध्यम से ‘मन की बात’ से जुड़े हैं, वे अभी कुछ paintings टीवी पर देख भी सकते हैं। इन Paintings में हमारे देवी-देवता, नृत्य की कलाएँ और महान विभूतियों को देखकर आपको बहुत अच्छा लगेगा। इनमें आपको भारत में पाए जाने वाले जीव-जंतुओं से लेकर और भी बहुत कुछ देखने को मिलेगा। इनमें ताजमहल की एक शानदार Painting भी शामिल है, जिसे 13 साल की एक बच्ची ने बनाया है। आपको ये जानकर हैरानी होगी इस दिव्यांग बच्ची ने अपने मुँह से इस painting को तैयार किया है। **सबसे दिलचस्प बात यह है कि इन Painting को बनाने वाले भारत के नहीं, बल्कि Egypt के students हैं, वहाँ के विद्यार्थी हैं। कुछ ही हफ़्ते पहले Egypt के करीब 23 हज़ार students ने एक painting प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था।** वहाँ उन्हें भारत की संस्कृति और दोनों देशों के ऐतिहासिक सम्बंधों को बताने वाली paintings तैयार करनी थी। मैं इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले सभी युवाओं की सराहना करता हूँ। उनकी creativity की जितनी भी प्रशंसा की जाए, वो कम है।

साथियो, दक्षिण अमरीका का एक देश है पराग्वे। वहाँ रहने वाले भारतीयों की संख्या एक हज़ार से ज़्यादा नहीं होगी। पराग्वे में एक अद्भुत प्रयास हो रहा है। वहाँ भारतीय दूतावास में एरीका ह्युबर free आयुर्वेद consultation देती हैं। आयुर्वेद की सलाह लेने के लिए आज उनके पास स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में पहुँच रहे हैं। एरीका ह्युबर ने भले ही engineering की पढ़ाई की हो, लेकिन उनका मन तो आयुर्वेद में ही बसता है। उन्होंने आयुर्वेद से जुड़े Courses किए थे और समय के साथ वे इसमें पारंगत होती चली गईं।

साथियो, ये हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा तमिल है और हर हिन्दुस्तानी को इसका गर्व है। दुनियाभर के देशों में इसे सीखने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। **पिछले महीने के आखिर में फ़िजी में भारत सरकार के सहयोग से Tamil Teaching Programme शुरू हुआ। बीते 80 वर्षों में यह पहला अवसर है, जब फ़िजी में तमिल के Trained Teachers इस भाषा को सिखा रहे हैं।** मुझे ये जानकर अच्छा लगा कि आज फ़िजी के students तमिल भाषा और संस्कृति को सीखने में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं।

साथियो, ये बातें, ये घटनाएँ, सिर्फ सफलता की कहानियाँ नहीं हैं। ये हमारी सांस्कृतिक विरासत की भी गाथाएँ हैं। ये उदाहरण हमें गर्व से भर देते हैं। Art से आयुर्वेद तक और Language से लेकर Music तक, भारत में इतना कुछ है, जो दुनिया में छा रहा है।

साथियो, सर्दी के इस मौसम में देश-भर से खेल और fitness को लेकर कई activities हो रही हैं। मुझे खुशी है कि लोग fitness को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना रहे हैं। **कश्मीर में Skiing**

से लेकर गुजरात में पतंगबाजी तक, हर तरफ खेल का उत्साह देखने को मिल रहा है। #SundayOnCycle और #CyclingTuesday जैसे अभियानों से Cycling को बढ़ावा मिल रहा है।

साथियो, अब मैं आपको एक ऐसी अनोखी बात बताना चाहता हूँ जो हमारे देश में आ रहे बदलाव और युवा साथियों के जोश और जज़्बे का प्रतीक है। क्या आप जानते हैं कि हमारे बस्तर में एक अनूठा Olympic शुरू हुआ है! जी हाँ, पहली बार हुए बस्तर Olympic से बस्तर में एक नई क्रांति जन्म ले रही है। **मेरे लिए ये बहुत ही ख़ुशी की बात है कि बस्तर Olympic का सपना साकार हुआ है। आपको भी ये जानकर अच्छा लगेगा कि यह उस क्षेत्र में हो रहा है, जो कभी माओवादी हिंसा का गवाह रहा है। बस्तर Olympic का शुभंकर है– 'वन भैंसा और पहाड़ी मैना'। इसमें बस्तर की समृद्ध संस्कृति की झलक दिखती है। इस बस्तर खेल महाकुम्भ का मूल मंत्र है–**

'करसाय ता बस्तर बरसाए ता बस्तर'

यानी 'खेलेगा बस्तर– जीतेगा बस्तर'।

पहली ही बार में बस्तर Olympic में 7 जिलों के एक लाख 65 हज़ार खिलाड़ियों ने भाग लिया है। यह सिर्फ एक आंकड़ा नहीं है– यह हमारे युवाओं के संकल्प की गौरव-गाथा है। Athletics, तीरंदाजी, Badminton, Football, Hockey, Weightlifting, Karate, कबड्डी, खो-खो और Volleyball – हर खेल में हमारे युवाओं ने अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है। कारी कश्यप जी की कहानी मुझे बहुत प्रेरित करती है। एक छोटे से गाँव से आने वाली कारीजी ने तीरंदाजी में रजत पदक जीता है। वे कहती हैं, "बस्तर Olympic ने हमें सिर्फ खेल का मैदान ही नहीं, जीवन में आगे बढ़ने का अवसर दिया है।" सुकमा की पायल कवासीजी

की बात भी कम प्रेरणादायक नहीं है। Javelin Throw में स्वर्ण पदक जीतने वाली पायलजी कहती हैं, "अनुशासन और कड़ी मेहनत से कोई भी लक्ष्य असम्भव नहीं है।" सुकमा के दोरनापाल के पुनेम सन्नाजी की कहानी तो नए भारत की प्रेरक कथा है। एक समय नक्सली प्रभाव में आए पुनेमजी आज wheelchair पर दौड़कर मेडल जीत रहे हैं। उनका साहस और हौसला हर किसी के लिए प्रेरणा है। कोडागाँव के तीरंदाज रंजू सोरीजी को 'बस्तर youth icon' चुना गया है। उनका मानना है– बस्तर Olympic दूरदराज के युवाओं को राष्ट्रीय मंच तक पहुँचाने का अवसर दे रहा है।

साथियो, बस्तर Olympic केवल एक खेल आयोजन नहीं है। यह एक ऐसा मंच है, जहाँ विकास और खेल का संगम हो रहा है, जहाँ हमारे युवा अपनी प्रतिभा को निखार रहे हैं और एक नए भारत का निर्माण कर रहे हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ:

अपने क्षेत्र में ऐसे खेल आयोजनों को प्रोत्साहित करें #खेलेगा भारत – जीतेगा भारत, के साथ अपने क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं की कहानियाँ साझा करें, स्थानीय खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर दें, याद रखिए, खेल से, न केवल शारीरिक विकास होता है, बल्कि ये Sportsman spirit से समाज को जोड़ने का भी एक सशक्त माध्यम है। तो खूब खेलिए-खूब खिलिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत की दो बड़ी उपलब्धियाँ आज विश्व का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। इन्हें सुनकर आपको भी गर्व महसूस होगा। ये दोनों सफलताएँ स्वास्थ्य के क्षेत्र में मिली हैं। **पहली उपलब्धि मिली है– मलेरिया से लड़ाई में।** मलेरिया की बीमारी चार हजार वर्षों से मानवता के लिए एक बड़ी चुनौती रही है। आज़ादी के समय भी यह

हमारी सबसे बड़ी स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक थी। एक महीने से लेकर पाँच साल तक के बच्चों की जान लेने वाली सभी संक्रामक बीमारियों में मलेरिया का तीसरा स्थान है। आज, मैं संतोष से कह सकता हूँ कि देशवासियों ने मिलकर इस चुनौती का दृढ़ता से मुकाबला किया है। **विश्व स्वास्थ्य संगठन – WHO की रिपोर्ट कहती है– "भारत में 2015 से 2023 के बीच मलेरिया के मामलों और इससे होने वाली मौतों में 80 प्रतिशत की कमी आई है"। यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। सबसे सुखद बात यह है, यह सफलता जन-जन की भागीदारी से मिली है।** भारत के कोने-कोने से, हर जिले से हर कोई इस अभियान का हिस्सा बना है। असम में जोरहाट के चाय बागानों में मलेरिया चार साल पहले तक लोगों की चिंता की एक बड़ी वजह बना हुआ था। लेकिन जब इसके उन्मूलन के लिए चाय बागान में रहने वाले एकजुट हुए, तो इसमें काफी हद तक सफलता मिलने लगी। अपने इस प्रयास में उन्होंने Technology के साथ-साथ Social media का भी भरपूर इस्तेमाल किया है। इसी तरह हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले ने मलेरिया पर नियंत्रण के लिए बड़ा अच्छा model पेश किया। यहाँ मलेरिया की monitoring के लिए जनभागीदारी काफी सफल रही है। नुक्कड़ नाटक और रेडियो के जरिए ऐसे संदेशों पर जोर दिया गया, जिससे मच्छरों की breeding कम करने में काफी मदद मिली है। देशभर में ऐसे प्रयासों से ही हम मलेरिया के खिलाफ जंग को और तेजी से आगे बढ़ा पाए हैं।

साथियो, अपनी जागरूकता और संकल्प शक्ति से हम क्या कुछ हासिल कर सकते हैं, इसका दूसरा उदाहरण है cancer से लड़ाई। **दुनिया के मशहूर Medical Journal Lancet की study**

वाकई बहुत उम्मीद बढ़ाने वाली है। इस Journal के मुताबिक अब भारत में समय पर cancer का इलाज शुरू होने की सम्भावना काफी बढ़ गई है। समय पर इलाज का मतलब है– cancer मरीज का treatment 30 दिनों के भीतर ही शुरू हो जाना और इसमें बड़ी भूमिका निभाई है– 'आयुष्मान भारत योजना' ने। इस योजना की वजह से cancer के 90 प्रतिशत मरीज, समय पर अपना इलाज शुरू करा पाए हैं। ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि पहले पैसे के अभाव में गरीब मरीज cancer की जाँच में, उसके इलाज से कतराते थे। अब **'आयुष्मान भारत योजना' उनके लिए बड़ा सम्बल बनी है। अब वो आगे बढ़कर अपना इलाज कराने के लिए आ रहे हैं।** 'आयुष्मान भारत योजना' ने cancer के इलाज में आने वाली पैसों की परेशानी को काफी हद तक कम किया है। अच्छा ये भी है, कि आज समय पर cancer के इलाज को लेकर लोग पहले से कहीं अधिक जागरूक हुए हैं। यह उपलब्धि जितनी हमारे Healthcare system की है, डॉक्टरों, नर्सों और Technical staff की है, उतनी ही आप सभी मेरे नागरिक भाई-बहनों की भी है। सबके प्रयास से cancer को हराने का संकल्प और मजबूत हुआ है। इस सफलता का credit उन सभी को जाता है, जिन्होंने जागरूकता फैलाने में अपना अहम योगदान दिया है।

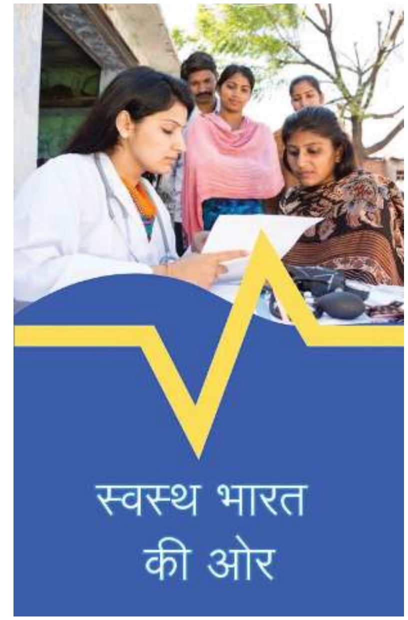

Cancer से मुकाबले के लिए एक ही मंत्र है– Awareness, Action और Assurance. Awareness यानी cancer और इसके लक्षणों के प्रति जागरूकता, Action यानी समय पर जाँच और इलाज, Assurance यानी मरीजों के लिए हर मदद उपलब्ध होने का विश्वास। आइए, हम सब मिलकर cancer के खिलाफ़ इस लड़ाई को तेजी से आगे ले जाएँ और ज़्यादा-से-ज़्यादा मरीजों की मदद करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज मैं आपको ओडिशा के कालाहांडी के एक ऐसे प्रयास की बात बताना चाहता हूँ, जो कम पानी और कम संसाधनों के बावजूद सफलता की नई गाथा लिख रहा है। ये

है कालाहांडी की 'सब्जी क्रांति'। जहाँ कभी किसान पलायन करने को मजबूर थे वहीं आज, कालाहांडी का गोलामुंडा ब्लॉक एक vegetable hub बन गया है। यह परिवर्तन कैसे आया? इसकी शुरुआत सिर्फ 10 किसानों के एक छोटे से समूह से हुई। इस समूह ने मिलकर एक FPO – 'किसान उत्पाद संघ' की स्थापना की, खेती में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल शुरू किया और आज उनका ये FPO करोड़ों का कारोबार कर रहा है। आज 200 से अधिक किसान इस FPO से जुड़े हैं, जिनमें 45 महिला किसान भी हैं। ये लोग मिलकर 200 एकड़ में टमाटर की खेती कर रहे हैं, 150 एकड़ में करेले का उत्पादन कर रहे हैं। अब इस FPO का सालाना turnover भी बढ़कर डेढ़ करोड़ से ज़्यादा हो गया है। आज कालाहांडी की सब्जियाँ न केवल ओडिशा के विभिन्न जिलों में बल्कि दूसरे राज्यों में भी पहुँच रही हैं और वहाँ का किसान अब आलू और प्याज की खेती की नई तकनीकें सीख रहा है।

साथियो, कालाहांडी की यह सफलता हमें सिखाती है कि संकल्प शक्ति और सामूहिक प्रयास से क्या नहीं किया जा सकता। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ:-

अपने क्षेत्र में FPO को प्रोत्साहित करें।

किसान उत्पादक संगठनों से जुड़ें और उन्हें मजबूत बनाएँ।

याद रखिए– छोटी शुरुआत से भी बड़े परिवर्तन सम्भव हैं। हमें बस दृढ़ संकल्प और टीम भावना की ज़रूरत है।

साथियो, आज की 'मन की बात' में हमने सुना कि कैसे हमारा भारत विविधता में एकता के साथ आगे बढ़ रहा है। चाहे वो खेल का मैदान हो या विज्ञान का क्षेत्र, स्वास्थ्य हो या शिक्षा– हर क्षेत्र में भारत नई ऊँचाइयों को छू रहा है। हमने एक परिवार की तरह मिलकर हर चुनौती का सामना किया और नई सफलताएँ हासिल की। **2014 से शुरू हुए 'मन की बात' के 116 episodes में मैंने देखा है कि 'मन की बात' देश की सामूहिक शक्ति का एक जीवंत दस्तावेज़ बन गया है।** आप सभी ने इस कार्यक्रम को अपनाया, अपना बनाया। हर महीने आपने अपने विचारों और प्रयासों को साझा किया। कभी किसी young innovator के idea ने प्रभावित किया, तो कभी किसी बेटी की achievement ने गौरवान्वित किया। ये आप सभी की भागीदारी है, जो देश के कोने-कोने से positive energy को एक साथ लाती है। **'मन की बात' इसी positive energy के amplification का मंच बन गया है, और अब 2025 दस्तक दे रहा है। आने वाले साल में 'मन की बात' के माध्यम से हम और भी inspiring प्रयासों को साझा करेंगे।** मुझे विश्वास है कि देशवासियों की positive सोच और innovation की भावना से भारत नई ऊँचाइयों को छुएगा। **आप अपने आस-पास के unique प्रयासों को #Mannkibaat के साथ share करते रहिए। मैं जानता हूँ कि अगले साल की हर 'मन की बात' में हमारे पास एक दूसरे से साझा करने के लिए बहुत कुछ होगा। आप सभी को 2025 की ढेर सारी शुभकामनाएँ। स्वस्थ रहें, खुश रहें, Fit india Movement में आप भी जुड़ जाइए, खुद को भी fit रखिए। जीवन में प्रगति करते रहें। बहुत-बहुत धन्यवाद।**

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारत के संविधान की यात्रा

"हम सभी के लिए बहुत गौरव की बात है। हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें जो संविधान सौंपा है, वे समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है। संविधान हमारे लिए Guiding light, हमारा मार्गदर्शक है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया भारतीय संविधान केवल एक कानूनी संरचना नहीं है, बल्कि हमारे सामूहिक संकल्प का प्रतिबिम्ब है, जो एक जीवंत राष्ट्र की आशाओं, सपनों और विविध पहचानों को मूर्त रूप देता है।"

–किरेन रिजिजू
संसदीय कार्य मंत्रालय और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री, भारत सरकार

भारत का संविधान देश का सर्वोच्च कानून है, जो देश के शासन के लिए रूपरेखा तैयार करता है। इसे दुनिया के सबसे लम्बे और सबसे विस्तृत रूप से वर्णित संविधानों में से एक माना जाता है। भारत के संविधान की यात्रा दूरदर्शिता और दृढ़ता की कहानी है, जो उन लाखों भारतीयों की आकांक्षाओं को दर्शाती है, जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी और न्याय, समानता तथा बंधुत्व की माँग की। स्वतंत्रता से बहुत पहले शुरू हुई यह यात्रा ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्षों के माध्यम से जारी रही और 1950 में संविधान को अपनाने के साथ समाप्त हुई।

स्वतंत्रता पूर्व प्रयास : भारत के संविधान के बीज वास्तविक मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया से बहुत पहले बोए गए थे। 1858 में, जब भारत को औपचारिक रूप से ब्रिटिश उपनिवेश बनाया गया, तो भारतीय विद्वानों और राजनीतिक नेताओं के बीच यह अहसास बढ़ रहा था कि देश के भविष्य को ऐसे कानूनों तथा शासन के ढाँचे द्वारा आकार दिया जाना चाहिए, जो भारतीय मूल्यों को प्रतिबिम्बित करते हों। संवैधानिक सुधार की दिशा में शुरुआती प्रयास भारतीय परिषद अधिनियम 1861 के साथ शुरू हुए, इसके बाद भारतीय परिषद अधिनियम 1892 आया, जिसने विधायी प्रक्रिया में सीमित भारतीय भागीदारी की अनुमति दी। हालाँकि, प्रमुख मोड़ 1919 के मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के साथ आया, जिसके कारण भारत सरकार अधिनियम 1919 बना, जिसमें कुछ हद तक स्वशासन का वादा किया गया।

1935 में 'भारत सरकार अधिनियम 1935' स्वशासन की दिशा में सबसे महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर बन गया, जिसने भविष्य के संविधान के लिए आधार तैयार किया। हालाँकि यह अब भी ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण में था और लोकतंत्र, समानता तथा न्याय के आदर्शों को पूरी तरह से नहीं अपनाता था।

स्वतंत्रता और संवैधानिक सुधारों की माँग : भारत के लिए एक अलग संविधान की माँग ने स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान गति पकड़ी। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस और अन्य नेताओं ने भारत को एक सम्प्रभु, लोकतांत्रिक और गणतंत्रात्मक राष्ट्र बनाने की जोरदार वकालत की। उस समय की प्रमुख राजनीतिक पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1935 में अपने सत्र के दौरान देश के लिए एक नया संविधान बनाने के लिए औपचारिक रूप से संविधान सभा के गठन का आह्वान किया। स्वतंत्रता के लिए आंदोलन तेज होने के साथ ही यह आह्वान और भी प्रमुख हो गया। ब्रिटिश सरकार ने 1946 में

संवैधानिक सुधारों की तात्कालिकता को महसूस करते हुए संविधान सभा स्थापित करने का निर्णय लिया। 1946 में संविधान सभा के लिए चुनाव हुए और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस प्रमुख पार्टी के रूप में उभरी। संविधान सभा का कार्य एक ऐसे संविधान का मसौदा तैयार करना था, जो औपनिवेशिक कानूनों की जगह ले और भारत को स्वशासन के एक नए युग में ले जाए।

संविधान सभा और संविधान का मसौदा तैयार करनाः 9 दिसम्बर, 1946 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में भारत की संविधान सभा की पहली बैठक हुई। सभा में प्रमुख नेता, बुद्धिजीवी और न्यायविद् शामिल थे, जैसे कि डॉ. बी आर आम्बेडकर, जो आगे चलकर संविधान के मुख्य वास्तुकार बने। संविधान सभा में 299 सदस्य शामिल थे, जो विभिन्न

क्षेत्रों, धर्मों और समुदायों का प्रतिनिधित्व करते थे, जिससे प्रक्रिया की समावेशिता सुनिश्चित हुई।

संविधान का मसौदा तैयार करने में दो साल से अधिक का समय लगा। सदस्यों ने सरकार की संरचना नागरिकों के अधिकार एवं केंद्र तथा राज्य सरकारों के बीच शक्तियों के वितरण सहित शासन के हर पहलुओं पर सावधानीपूर्वक काम किया। डॉ. बी आर आम्बेडकर के नेतृत्व वाली समिति ने मौलिक अधिकारों, सामाजिक न्याय और समानता से सम्बंधित प्रावधानों का मसौदा तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। संविधान के निर्माताओं ने ब्रिटिश संसदीय प्रणाली, अमरीकी अधिकार विधेयक और आयरिश संविधान सहित विभिन्न स्रोतों से प्रेरणा ली। बहुत विचार-विमर्श और बातचीत के बाद संविधान का अंतिम मसौदा 26 नवम्बर, 1949 को अपनाया गया। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू हुआ, जिसने एक नए लोकतांत्रिक गणराज्य की शुरुआत की।

भारत का संविधान एक विविध राष्ट्र की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिनिधित्व करता है। यह सामाजिक और आर्थिक सुधारों की आवश्यकता को पहचानते हुए लोकतंत्र, न्याय और समानता के मूल्यों को सुनिश्चित

करता है। भारतीय संविधान की यात्रा इसके निर्माताओं और भारत के लोगों की दृढ़ता तथा प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जिन्होंने न्यायपूर्ण और निष्पक्ष समाज के लिए संघर्ष किया। पिछले कुछ वर्षों में देश की बदलती ज़रूरतों के अनुसार संविधान में कई संशोधन हुए हैं। यह भारत के लोकतंत्र की आधारशिला बना हुआ है, जो चुनौतियों और प्रगति के समय में राष्ट्र का मार्गदर्शन करता है।

75 वर्ष संविधान के

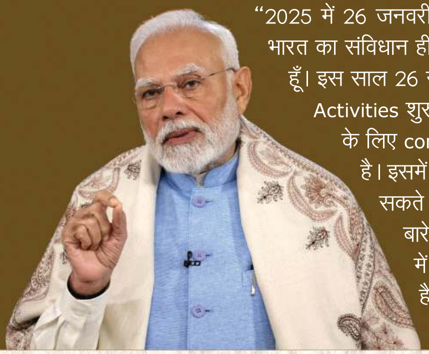

"2025 में 26 जनवरी को हमारे संविधान को लागू हुए 75 वर्ष होने जा रहे हैं। ये भारत का संविधान ही है जिसकी वजह से मैं आज यहाँ हूँ, आपसे बात कर पा रहा हूँ। इस साल 26 नवम्बर को संविधान दिवस से एक साल तक चलने वाली कई Activities शुरू हुई हैं। देश के नागरिकों को संविधान की विरासत से जोड़ने के लिए constitution75.com नाम से एक खास website भी बनाई गई है। इसमें आप संविधान की प्रस्तावना पढ़कर अपना video upload कर सकते हैं। अलग-अलग भाषाओं में संविधान पढ़ सकते हैं, संविधान के बारे में प्रश्न भी पूछ सकते हैं। 'मन की बात' के श्रोताओं से, स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों से, कॉलेज में जाने वाले युवाओं से, मेरा आग्रह है, इस website पर जरूर जाकर देखें, इसका हिस्सा बनें।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, ('मन की बात' सम्बोधन में)

1. भारत का संविधान 22 भाग, 448 अनुच्छेद और 12 अनुसूची के साथ किसी भी सम्प्रभु देश का सबसे लम्बा लिखित संविधान है।

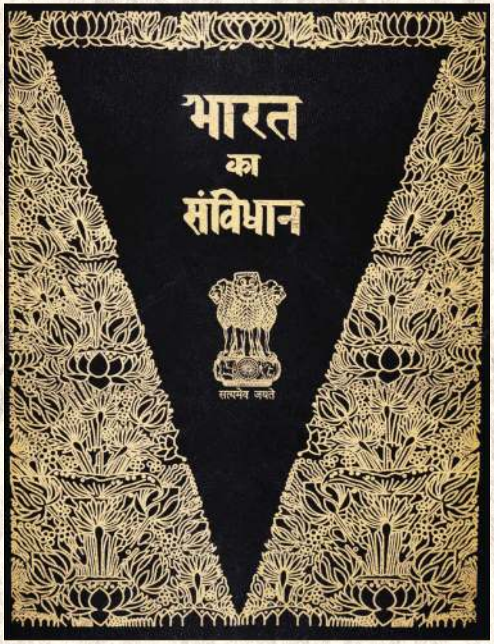

2. भारत का संविधान टाइपसेट/मुद्रित नहीं किया गया था, बल्कि यह कैलीग्राफी के इस्तेमाल से हस्तलिखित था।
3. प्रेम बिहारी रायजादा ने भारत के संविधान की कैलीग्राफी को पूरा करने में पाँच महीने का समय लगाया।
4. मूल भारतीय संविधान दो भाषाओं – हिन्दी और अंग्रेजी में हस्तलिखित है। इन्हें संसद के केंद्रीय पुस्तकालय में हीलियम से भरे बक्सों में विशेष रूप से संरक्षित किया गया है।
5. भारत के संविधान का संथाली, उड़िया, मराठी, तमिल आदि सहित सभी 22 अनुसूचित भाषाओं में अनुवाद किया गया है।
6. संविधान सभा की सदस्य हंसा जीवराज मेहता ने महिलाओं के अधिकारों की वकालत की और लैंगिक समानता के सम्बंध में भारतीय संविधान में योगदान दिया।
7. भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने में दो साल, 11 महीने और 17 दिन लगे। संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसम्बर, 1946 को 205 सदस्यों के साथ डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा की अध्यक्षता में हुई थी।
8. संविधान सभा की आगंतुक दीर्घा से तीन वर्षों की अवधि में भारत के संविधान के प्रारूपण के दौरान हुई बहसों को 53,000 से अधिक नागरिकों ने देखा।
9. भारत का संविधान 26 नवम्बर, 1949 को अंगीकृत किया गया था, लेकिन यह 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ, जिस दिन को अब गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।
10. संविधान के लागू होने से ठीक दो दिन पहले 24 जनवरी, 1950 को इस पर संविधान सभा के 284 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए थे।
11. भारत के संविधान ने ब्रिटिश संसदीय प्रणाली, अमरीकी संविधान और आयरिश संविधान सहित कई देशों से अवधारणाएँ ग्रहण की हैं।
12. भारत का संविधान अपने नागरिकों को छह मौलिक अधिकार प्रदान करता है। ये अधिकार हैं स्वतंत्रता का अधिकार, समानता का अधिकार, सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार, नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समानता। हाल ही में, निजता के अधिकार को भी मौलिक अधिकारों में जोड़ा गया है।

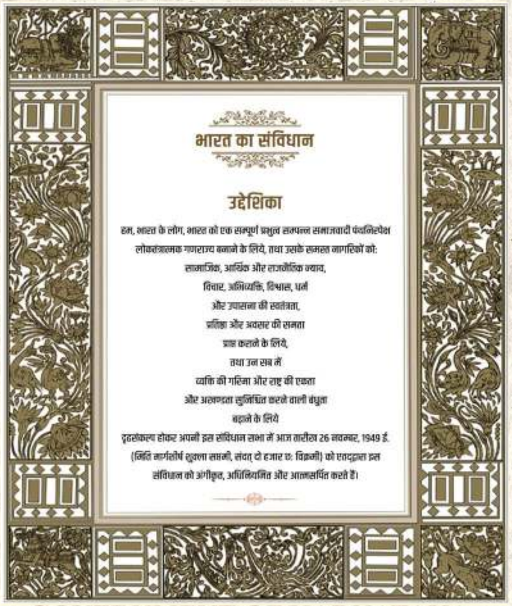

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये, तथा उसके समस्त नागरिकों को:
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिये,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिये
दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छः विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1950 से 2025 : संविधान लोकतंत्र की दूरदर्शिता और दृढ़ता का वसीयतनामा

किरेन रिजिजू
संसदीय कार्य मंत्रालय और
अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री,
भारत सरकार

जैसा कि हम भारत की स्वतंत्रता और अपने संविधान की चिरस्थायी विरासत के 75 साल पूरे होने का स्मरणोत्सव मना रहे हैं, यह इस बात पर विचार करने का उपयुक्त अवसर है कि इस जीवंत दस्तावेज ने अपने लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए राष्ट्र को कैसे विकसित, अनुकूलित और निर्देशित किया है। 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया भारतीय संविधान केवल एक कानूनी संरचना नहीं है, बल्कि हमारे सामूहिक संकल्प का प्रतिबिम्ब है, जो एक जीवंत राष्ट्र की आशाओं, सपनों और विविध पहचानों को मूर्त रूप देता है।

भारतीय संविधान की रचना एक लोकतांत्रिक, समावेशी और प्रगतिशील समाज के लिए मजबूत आधार प्रदान करने की दृष्टि से की गई थी। पिछले 75 वर्षों में, यह उभरती चुनौतियों का समाधान करने, सामाजिक परिवर्तनों के प्रति उत्तरदायी होने और राष्ट्र की संचालक शक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित हुआ है। संशोधनों, न्यायिक व्याख्याओं और प्रगतिशील कानून के माध्यम से, संविधान ने सुनिश्चित किया है कि शासन समावेशी बना रहे और अधिकारों की रक्षा हो।

संविधान नागरिकों के रूप में हमारे मौलिक अधिकारों से लेकर हमारी जिम्मेदारियों तक, जीवन को हर पहलू से प्रभावित करता है। यह कानून की दृष्टि से समानता सुनिश्चित करता है, बोलने तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी देता है, और शिक्षा, रोजगार तथा सम्मान के अधिकार की रक्षा करता है। ये अधिकार व्यक्तियों को सशक्त बनाते हैं, सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देते हैं, और न्याय, स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व के सिद्धांतों को बनाए रखते हैं।

Constitution75.com जैसी पहल हमारे संविधान की विरासत का स्मरणोत्सव मनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह प्लेटफार्म ज्ञान और प्रेरणा के भंडार के रूप में कार्य करता है, जो नागरिकों को हमारी संवैधानिक यात्रा के मूल्यों, सिद्धांतों और महत्त्व से परिचित कराता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि यह दस्तावेज प्रत्येक नागरिक के अधिकारों और जिम्मेदारियों को सुनिश्चित करते हुए कैसे भारत के वैश्विक महाशक्ति में परिवर्तन का आधार रहा है।

इस पहल के माध्यम से, हमारा उद्देश्य युवा पीढ़ी, विद्वानों और नीति निर्माताओं को संविधान की प्रासंगिकता और हमारे लोकतंत्र के भविष्य को आकार देने में इसकी भूमिका के बारे में सार्थक संवाद में शामिल करना है।

अंत में, भारतीय संविधान हमारे संस्थापक नेताओं की दूरदर्शिता और हमारे लोकतंत्र की दृढ़ता का एक वसीयतनामा है। जैसा कि हम इसके 75वें वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहे हैं, आइए हम इसके सिद्धांतों का सम्मान करने, इसकी विरासत को संजोने और एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की दिशा में प्रयास करने का संकल्प लें, जहाँ प्रत्येक नागरिक अपनी वास्तविक क्षमता का एहसास कर सके। जय हिन्द!

जी. दुर्गाबाई

गोकुलभाई दौलतराम भट्ट

गोपीनाथ बोरदोलोई

ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर

महाकुम्भ

युगों से आस्था और विरासत की यात्रा

"कुम्भ की विशेषता इसकी विविधता में भी है। इस आयोजन में करोड़ों लोग एक साथ एकत्रित होते हैं। लाखों संत, हज़ारों परम्पराएँ, सैकड़ों सम्प्रदाय, अनेकों अखाड़े, हर कोई इस आयोजन का हिस्सा बनता है। कहीं कोई भेदभाव नहीं दिखता है, कोई बड़ा नहीं होता है, कोई छोटा नहीं होता है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

हर 12 साल में मनाया जाने वाला महाकुम्भ मेला दुनिया का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम है। हिन्दू पौराणिक कथाओं में गहराई से निहित यह आयोजन आस्था, संस्कृति और परम्परा का संगम है। सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति के ज्योतिषीय संरेखण द्वारा संचालित यह मेला आंतरिक शांति और आध्यात्मिक एकता के लिए भारत की कालातीत खोज का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रयागराज में, जहाँ गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियाँ मिलती हैं, महाकुम्भ के सबसे प्रतिष्ठित रूप का प्रदर्शन होता है। 'तीर्थराज' या तीर्थ स्थलों के राजा के रूप में पहचाने जाने वाले प्रयागराज का ऐतिहासिक महत्त्व प्राचीन ग्रंथों और यात्रा वृत्तांतों में दर्ज है। मौर्य और गुप्त युग से लेकर मुगल काल तक यह शहर एक पवित्र और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ है। 7वीं शताब्दी में भारत आए चीन के यात्री ज़ुआनज़ैंग ने प्रयागराज को अपार प्राकृतिक सुंदरता, समृद्धि और सांस्कृतिक गहराई वाला क्षेत्र बताया था। इसके अलावा सम्राट अकबर ने इसे एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में स्थापित किया और जेम्स प्रिंसेप जैसे औपनिवेशिक प्रशासकों ने इसकी भव्यता का वर्णन किया, जिससे यह स्थायी रूप से आकर्षण का केंद्र बन गया। इस आयोजन के दौरान कई शाही स्नान के दिन होते हैं, जब भक्त इस विश्वास के साथ जल में डुबकी लगाते हैं कि इससे आत्मा शुद्ध होगी।

परम्परा और आधुनिकता का मिश्रण

महाकुम्भ मेला न केवल एक आध्यात्मिक आयोजन है, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक उत्सव भी है। विभिन्न पृष्ठभूमियों से तपस्वी, साधु, कल्पवासी और तीर्थयात्री एक साथ आते हैं, जिससे एक 'लघु भारत' बनता है, जो एकता और भक्ति का प्रतीक है। 2017 में यूनेस्को द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त, यह आयोजन भारत की समृद्ध परम्पराओं और आधुनिक समय में अनुकूलन तथा विकास करने की इसकी क्षमता को उजागर करता है।

हाल के संस्करणों, विशेष रूप से प्रयागराज में 2019 कुम्भ मेले ने नियोजन और बुनियादी ढाँचे में उल्लेखनीय प्रगति को प्रदर्शित किया है। इस आयोजन ने 24 करोड़ तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया और अपने सावधानीपूर्वक आयोजन के लिए वैश्विक प्रशंसा अर्जित की। 70 मिशन प्रमुखों और 3,200 प्रवासी भारतीय प्रतिभागियों सहित 182 देशों के नेताओं ने व्यवस्थाओं की सराहना की।

इस आयोजन ने तीन गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाएः

'पेंट माई सिटी' अभियान के तहत सबसे बड़ा सार्वजनिक पेंटिंग अभियान, सबसे बड़ी बस परेड और सबसे बड़ी स्वच्छता प्रणाली के लिए तीन गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए गए।

3,200 हेक्टेयर में फैले इस आयोजन ने दुनिया का सबसे बड़ा अस्थायी शहर बनाया, जिसमें थीम वाले द्वार, बेहतर सड़कें और व्यापक सौंदर्यीकरण के प्रयास शामिल हैं। डिजिटल भूमि आवंटन, जीआईएस-आधारित नेविगेशन मानचित्र और बेहतर सुरक्षा उपायों जैसे नवाचारों ने आधुनिक तकनीक के साथ परम्परा के सहज एकीकरण को रेखांकित किया।

महाकुम्भ 2025 : भविष्य के लिए एक विज़न

महाकुम्भ 2025 इन उपलब्धियों को

आगे बढ़ाने का वादा करता है, जिसमें आध्यात्मिकता को नवाचार के साथ जोड़ा गया है। प्रयागराज का महाकुम्भ नगर, उत्तर प्रदेश का सबसे नया जिला है, जिसे अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित और विकसित किया गया है। ड्रोन-मैप की गई स्थलाकृतियों और स्वचालित प्रणालियों सहित डिजिटल उन्नति कुशल भूमि आवंटन और सेवाएँ सुनिश्चित करती है। एआई-संचालित कैमरे, अंडरवाटर ड्रोन और रिमोट-नियंत्रित लाइफ बॉयज़ जैसी उच्च तकनीक सुविधाएँ सुरक्षा को बढ़ाती हैं, जिससे यह आयोजन अनुमानित 45 करोड़ आगंतुकों के लिए अधिक सुरक्षित हो जाता है।

इमर्सिव डिजिटल अनुभव, उत्सव में एक नया आयाम जोड़ेंगे। वर्चुअल रियलिटी स्टॉल तीर्थयात्रियों को प्रमुख घटनाओं का 36^0 डिग्री दृश्य प्रदान करेंगे, जबकि एक शानदार ड्रोन शो 'प्रयाग महात्म्यम' और 'समुद्र मंथन'

की कहानियाँ सुनाएगा, जिससे जादुई शाम का नज़ारा बनेगा। इस तरह के नवाचार, मेले को समावेशी और आकर्षक अनुभव में बदल देते हैं, जो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों आगंतुकों को आकर्षित करता है।

एक कालातीत तीर्थयात्रा

महाकुम्भ मेला अनुष्ठानों के लिए एक सभा से कहीं अधिक है। यह भारत की सांस्कृतिक विविधता और आध्यात्मिक एकता का उत्सव है। पारम्परिक संगीत, नृत्य और कला आधुनिक सुविधाओं के साथ मिलकर अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाला एक बहु-संवेदी अनुभव प्रदान करते हैं। अंतरराष्ट्रीय तीर्थयात्री और आध्यात्मिकता के साधक भी मेले के एकता, सहिष्णुता और उत्कृष्टता के सार्वभौमिक संदेश से आकर्षित होकर एकत्रित होते हैं। जीवंत भीड़ और रंग-बिरंगे प्रदर्शनों के बीच मेला इसका अनुस्मारक है कि आध्यात्मिक पूर्ति की लालसा एक सामान्य सूत्र है, जो राष्ट्रीयता, भाषा और विश्वासों से ऊपर उठकर मानवता को बाँधती है। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दोहराया, 'महाकुम्भ भारत की अपनी परम्पराओं का सम्मान करते हुए भविष्य में उन्हें सँजोए रखने की क्षमता का एक वसीयतनामा है।' 2025 का महाकुम्भ मेला न केवल आस्था का जश्न होगा बल्कि आध्यात्मिकता और प्रौद्योगिकी के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का उदाहरण भी पेश करेगा, जो सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समारोहों के लिए वैश्विक मानक स्थापित करेगा। अनुष्ठानों और प्रतीकात्मक कृत्यों से परे यह तीर्थयात्रियों को आंतरिक मीमांसा और दिव्यता के साथ गहरे सम्बंध बनाने का अवसर प्रदान करेगा। आधुनिक जीवन की माँगों से अक्सर प्रभावित दुनिया में महाकुम्भ मेला एकता, पवित्रता और ज्ञान का प्रतीक है। यह कालातीत तीर्थयात्रा एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि मानवता के विभिन्न मार्गों के बावजूद हम सार रूप से शांति, आत्म-साक्षात्कार और पवित्रता के प्रति हमेशा कायम रहने वाली श्रद्धा की साझा यात्रा में एकजुट हैं।

परम्परा और प्रौद्योगिकी एक साथ

डिजिटल महाकुम्भ और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

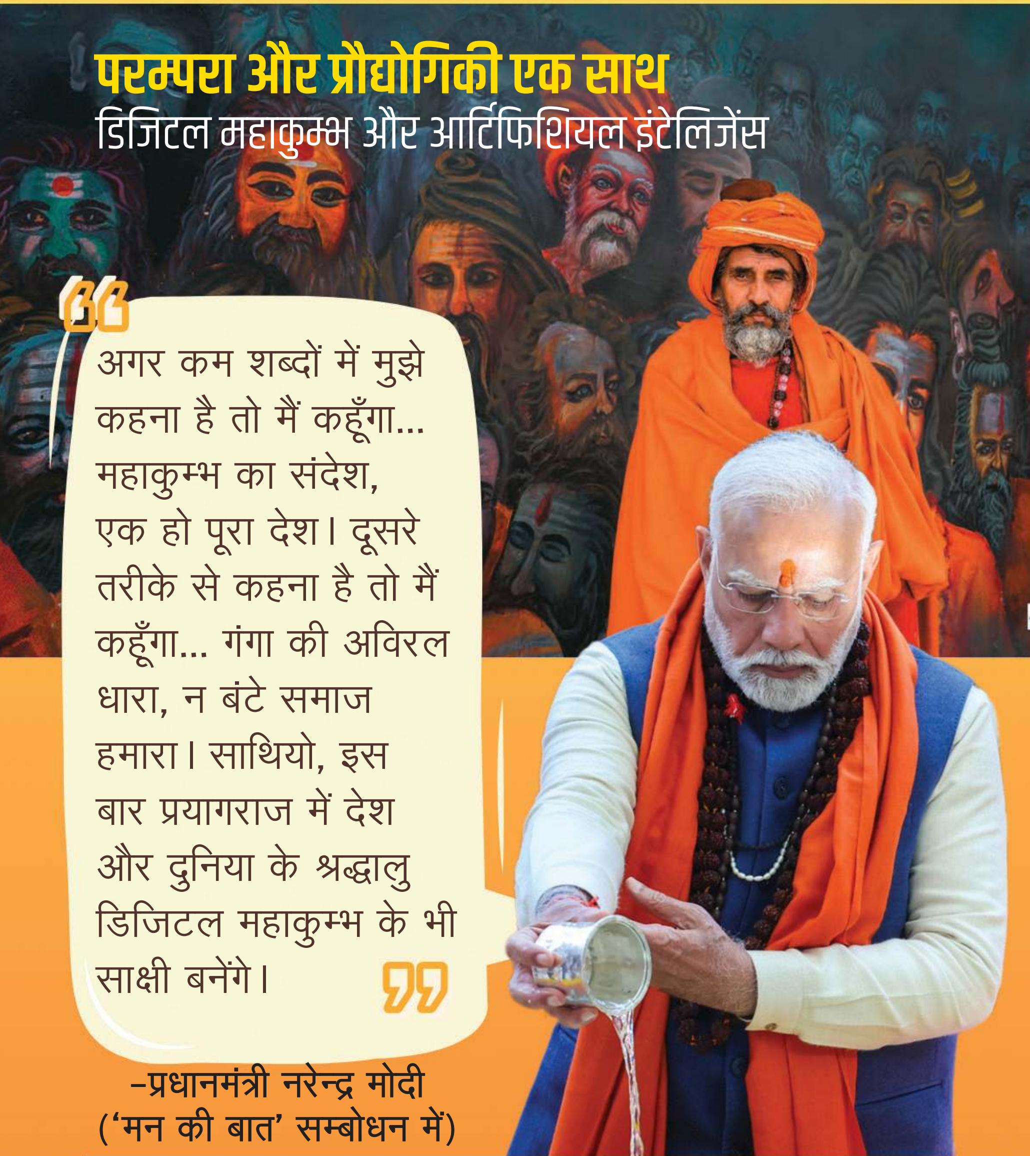

"अगर कम शब्दों में मुझे कहना है तो मैं कहूँगा... महाकुम्भ का संदेश, एक हो पूरा देश। दूसरे तरीके से कहना है तो मैं कहूँगा... गंगा की अविरल धारा, न बंटे समाज हमारा। साथियो, इस बार प्रयागराज में देश और दुनिया के श्रद्धालु डिजिटल महाकुम्भ के भी साक्षी बनेंगे।"

–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुम्भ 2025 आध्यात्मिकता और नवाचार का एक असाधारण संगम होने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 'एकता का महायज्ञ' के रूप में वर्णित यह प्रतिष्ठित आयोजन हमारी सदियों पुरानी परम्पराओं को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ जोड़कर भक्तों को अपनी आस्था से जुड़ने के तरीके को फिर से परिभाषित करेगा।

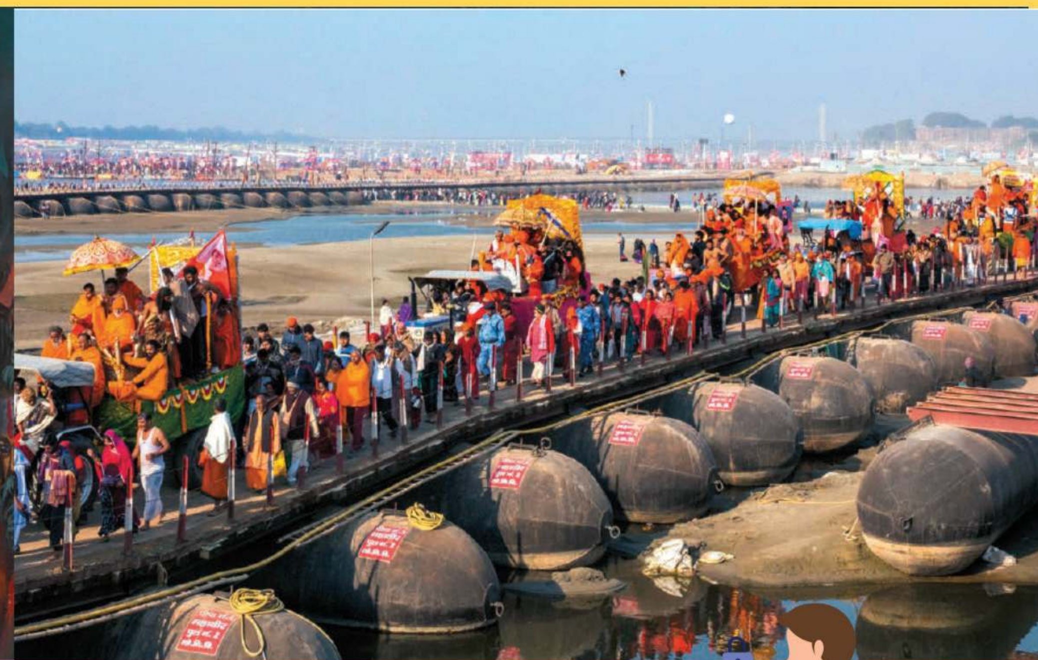

महाकुम्भ में साइबर सुरक्षा

- चौबीसों घंटे साइबर गश्त के लिए 56 समर्पित साइबर योद्धाओं की तैनाती।
- धोखाधड़ी वाली वेबसाइटों और सोशल मीडिया घोटालों जैसे साइबर खतरों से निपटने के लिए महाकुम्भ साइबर पुलिस स्टेशन की स्थापना।
- साइबर खतरों के बारे में जन जागरूकता के लिए 40 वैरिएबल मैसेजिंग डिस्प्ले (वीएमडी) की स्थापना।
- तत्क्षण सहायता के लिए एक समर्पित हेल्पलाइन, 1920

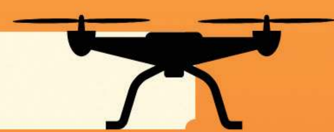

इमर्सिव डिजिटल अनुभव

- **360 डिग्री वर्चुअल रियलिटी स्टॉल :** तीर्थयात्री पेशवाई गंगा आरती जैसे आयोजनों का आनंद ले सकते हैं।
- **भव्य ड्रोन शो :** 2,000 ड्रोन का बेड़ा संगम पर एक विस्मयकारी दृश्यमान कथा के माहौल का सृजन करते हुए, समुद्र मंथन और प्रयाग महात्म्य जैसी कहानियाँ सुनाएगा।

इंफ्रास्ट्रक्चर और भूमि का डिजिटलीकरण

- भूमि की बुकिंग के लिए ऑनलाइन आवेदन
- स्थलाकृति के सटीक मानचित्रण के लिए ड्रोन सर्वेक्षण
- महाकुम्भ नगर के भीतर किसी खास स्थान का पता लगाने (नेविगेशन) के लिए गूगल मैप के साथ एकीकरण

भक्तों की सुरक्षा व्यवस्था

- **रिमोट-नियंत्रित जीवन रक्षक यंत्र** : पानी में किसी प्रकार की आपात स्थिति के लिए त्वरित तैनाती।
- **अंडरवाटर ड्रोन** : 100 मीटर की गहराई तक चौबीसों घंटे निगरानी के लिए सुसज्जित, एकीकृत कमांड और नियंत्रण केंद्र को अद्यतन अपडेट प्रेषित करना।
- **एआई-संचालित कैमरे** : ड्रोन और एंटी-ड्रोन के साथ-साथ निगरानी बढ़ाने के लिए रणनीतिक रूप से तैनात।

खोया-पाया सेवाएँ

पहली बार लापता तीर्थयात्रियों को उनके परिवारों से मिलाने के लिए हाई-टेक पंजीकरण केंद्र स्थापित किए गए हैं। ये केंद्र डिजिटल पंजीकरण, सोशल मीडिया घोषणाओं और खोए हुए व्यक्तियों के लिए पुलिस सहायता में मदद करते हैं।

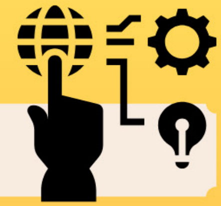

डिजिटल नवाचार

- **मोबाइल ऐप और ऑनलाइन सेवाएँ** : एक समर्पित ऐप श्रद्धालुओं की भीड़, आपातकालीन अलर्ट, दिशा-निर्देश और आवास सम्बंधी विवरण पर तत्क्षण अपडेट प्रदान करता है। यह आगंतुक प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने के लिए ऑनलाइन पंजीकरण और टिकटिंग सुविधा भी प्रदान करता है।
- **वाई-फाई जोन** : अस्थायी वाई-फाई जोन आगंतुकों के लिए कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेंगे।

कुम्भ 'Sah 'AI' yak' चैटबॉट

कुम्भ 'Sah 'AI' yak' चैटबॉट एक बहुभाषी एआई चैटबॉट है, जो हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, तेलुगु, मराठी, मलयालम, उर्दू, गुजराती, पंजाबी, कन्नड़ और बंगाली सहित 11 भाषाओं में उपलब्ध है। यह चैटबॉट तीर्थयात्रियों के लिए सहज संवाद सुनिश्चित करता है। भाषिणी चैटबॉट के साथ एकीकृत यह भाषा सम्बंधी बाधाओं को दूर करता है। यात्रा के अनुभव को सरल और सुविधाजनक बनाता है। व्हाट्सएप, आधिकारिक महाकुम्भ वेबसाइट और ऐप के माध्यम से सुलभ यह आगंतुकों के लिए एक व्यापक गाइड के रूप में कार्य करता है।

महाकुम्भ 2025 प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के परम्परा और नवाचार के बीच सामजस्य स्थापित करने के विजन का प्रतीक है। डिजिटल प्रगति को अपनाकर, यह महाकुम्भ न केवल आध्यात्मिक यात्रा के रूप में कार्य करेगा, बल्कि भारत की तकनीकी और सांस्कृतिक शक्ति का वैश्विक प्रदर्शन भी होगा, जो इसे आस्था, एकता और प्रगति का प्रतीक बनाएगा।

भारत की क्रिएटिव इंडस्ट्री

अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय गौरव को नया आयाम

“साथियो, हमारी एनीमेशन फिल्मों की, रेगुलर फिल्मों की, टीवी सीरियल्स की popularity दिखाती है कि भारत की क्रिएटिव इंडस्ट्री में कितनी क्षमता है। ये इंडस्ट्री न सिर्फ देश की प्रगति में बड़ा योगदान दे रही है, बल्कि हमारी Economy को भी नई ऊँचाइयों पर ले जा रही है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“हमारे युवाओं और हमारी क्रिएटर इकोनॉमी की इस क्षमता को पहचानते हुए, हमारे प्रधानमंत्री ने इस संगम के उत्सव की कल्पना की है, जिसे वेव्स (WAVES) कहा जाता है, जहाँ रचनात्मकता का तकनीकी नवाचार से मिलन होता है।”

–शेखर कपूर
फिल्म निर्देशक

भारत की क्रिएटिव इंडस्ट्री ने अपनी अनोखी पहचान और व्यापक प्रभाव से देश की अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक धरोहर को एक नई दिशा दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने कार्यक्रम ‘मन की बात’ में इस इंडस्ट्री की अहमियत और इसके योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने KTB यानी कृष, तृष और बाल्टीबॉय जैसे लोकप्रिय एनिमेशन सीरीज़ का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सीरीज़ बच्चों को उन स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियाँ पेश करती है, जिनकी गाथाएँ अक्सर अनसुनी रह जाती हैं। यह सीरीज़ भारत की कई भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी प्रसारित होती है, जो भारतीय क्रिएटिव इंडस्ट्री की क्षमता और सम्भावनाओं को दर्शाती है।

भारत की फिल्म और एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री ने वैश्विक मंच पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हुए देश की प्रगति में अहम योगदान दे रही है। फिल्म, एनिमेशन, टीवी सीरियल और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कंटेंट ने भारतीय क्रिएटिव इंडस्ट्री को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया है।

सिनेमा जगत की महान विभूतियाँ

भारतीय सिनेमा के लिए वर्ष 2024 ऐतिहासिक है। यह वर्ष फिल्म जगत की कई महान हस्तियों की 100वीं जयंती के नाम रहा। इनमें राज कपूर, मोहम्मद रफी, अक्किनेनी नागेश्वर राव और तपन सिन्हा जैसे दिग्गज शामिल हैं। राज कपूर ने अपनी फिल्मों के माध्यम से भारत की सॉफ्ट पावर को विश्व स्तर पर पहुँचाया। मोहम्मद रफी की आवाज़ हर दिल को छू लेती है, चाहे वह भक्ति गीत हो, रोमांटिक गाना हो या दर्द भरा नगमा। उनकी गायकी और आवाज़ का जादू आज भी सर चढ़कर बोलता है।

अक्किनेनी नागेश्वर राव ने तेलुगु सिनेमा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी फिल्मों ने भारतीय परम्पराओं और मूल्यों को सशक्त किया। वहीं, तपन सिन्हा की फिल्मों ने समाज में नई सोच और चेतना को जागृत किया। इन हस्तियों का योगदान भारतीय सिनेमा के लिए प्रेरणास्रोत है।

WAVES समिट : एक नया अवसर

प्रधानमंत्री मोदी ने एक और महत्त्वपूर्ण घोषणा करते हुए ‘मन की बात’ में कहा कि भारत पहली बार World Audio Visual Entertainment Summit (WAVES) का आयोजन करेगा। यह समिट भारतीय क्रिएटिव टैलेंट को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का एक अनूठा अवसर होगा। दुनिया भर के मीडिया,

एंटरटेनमेंट और क्रिएटिव इंडस्ट्री के दिग्गज भारत में आयोजित होने जा रहे इस समिट का हिस्सा बनेंगे।

इस आयोजन का उद्देश्य भारत को ग्लोबल कंटेट क्रिएशन का केंद्र बनाना है। यह न केवल भारतीय क्रिएटिव इंडस्ट्री के लिए, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी एक मील का पत्थर साबित होगा। प्रधानमंत्री ने देश के युवा क्रिएटर्स, फिल्म निर्माताओं, टीवी इंडस्ट्री के पेशेवरों, एनिमेशन एक्सपर्ट्स और गेमिंग इंडस्ट्री से जुड़े लोगों से WAVES समिट का हिस्सा बनने का आग्रह किया है।

क्रिएटिव इंडस्ट्री की बढ़ती भूमिका

भारत की क्रिएटिव इंडस्ट्री केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, यह देश की सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक भी है। यह इंडस्ट्री नई पीढ़ी को अपनी कला और संस्कृति से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके माध्यम से भारत अपनी

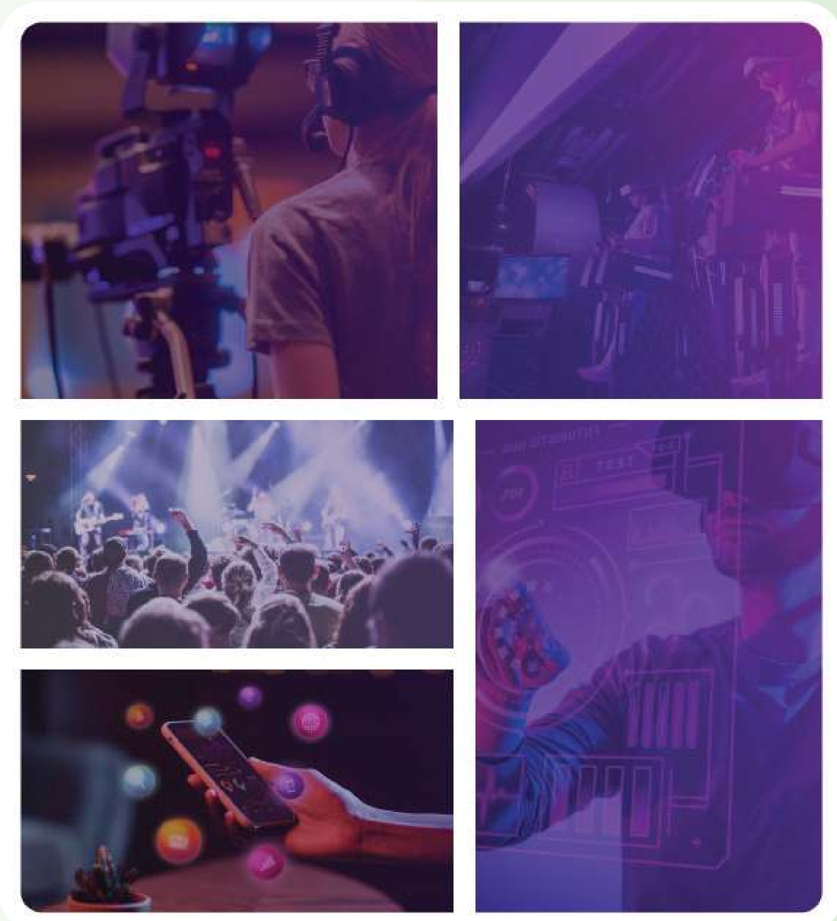

विविधता और समृद्ध परम्पराओं को विश्व मंच पर प्रस्तुत कर रहा है।

भारत की क्रिएटिव इंडस्ट्री अर्थव्यवस्था और रोज़गार के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा रही है। यह अब $30 बिलियन की इंडस्ट्री बन चुकी है और भारत की कार्यरत आबादी के लगभग 8 प्रतिशत लोगों को रोज़गार प्रदान कर रही है जो तुर्की, मैक्सिको और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों से अधिक है। दिलचस्प बात यह है कि क्रिएटिव क्षेत्रों में कार्य करने वालों की आय गैर-क्रिएटिव क्षेत्रों की तुलना में 88 प्रतिशत अधिक होती है, और यहाँ लिंग आधारित वेतन अंतर भी कम है। भारत विश्व का सबसे बड़ा फिल्म निर्माता देश है। यह इंडस्ट्री सिनेमा, गेमिंग, एनीमेशन, संगीत और इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग जैसे विविध क्षेत्रों में फैली हुई है।

आज जब भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है, तब हमारी क्रिएटर इकॉनमी इसमें नई ऊर्जा भर रही है। क्रिएटिव इंडस्ट्री का विस्तार न केवल रोजगार के नए अवसर प्रदान कर रहा है, बल्कि देश की अंतरराष्ट्रीय साख को भी बढ़ा रहा है।

भारत की क्रिएटिव इंडस्ट्री ने अपनी कला, तकनीक और संस्कृति से देश को एक नई पहचान दी है। यह इंडस्ट्री भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ बन चुकी है और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रही है। भारत को वैश्विक क्रिएटिव हब बनाने की दिशा में WAVES समिट जैसे आयोजन को एक मजबूत कदम के रूप में देखा जा रहा है। यह समय है कि हम सभी मिलकर इस यात्रा का हिस्सा बने और भारत की क्रिएटिव शक्ति को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

वेव्स समिट

रचनात्मकता का तकनीकी नवाचार से मिलन

शेखर कपूर

फिल्म निर्देशक

भारतीय, किसी भी अन्य राष्ट्र की तुलना में न केवल अधिक कन्टैंट का उपयोग करते हैं, बल्कि दुनिया में इसके सबसे बड़े रचियता भी हैं। निस्संदेह, हम ऐसे हैं, क्योंकि हम दुनिया के सबसे महान कहानीकार हैं। हमारी कहानियाँ दर्शाती हैं कि हम कैसे सम्बंध बनाते हैं, और कैसे अनुभव करते हैं; और हमने अपने इतिहास से अब तक अपनी संस्कृति, अपनी अविश्वसनीय विविधता और अपने ज्ञान को कैसे आगे बढ़ाया है। अन्य राष्ट्रों और अन्य संस्कृतियों ने भी हमारी कहानियों और हमारी सभ्यता को जाना है तथा इससे प्रभावित हुए हैं और इन्हें स्वीकारा है।

इसके अलावा अब हम कन्टैंट की तकनीक को सबसे अधिक अपनाने वाले बन गए हैं। ऐसा न केवल बिलियन डॉलर के विशाल बुनियादी ढाँचे वाली कम्पनियों के स्तर पर, बल्कि जमीनी स्तर पर भी हुआ है। लेकिन यह रीयल कन्टैंट कहाँ से आता है? व्यक्तिगत कहानीकारों, बड़ी और छोटी दोनों स्क्रीन के फिल्म निर्माताओं से लेकर यू ट्यूब क्रिएटर, कम्पोज़र, संगीतकार, कलाकार, गेम डेवलपर, प्रभावशाली व्यक्ति, प्रसारक, कोरियोग्राफर आदि तक इनकी अंतहीन सूची है। ये सभी भारत की विशाल 'रचनात्मक अर्थव्यवस्था' का हिस्सा हैं।

हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी के 5 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर की अर्थव्यवस्था का प्रेरणादायी विज़न जो दुनिया में एक मजबूत 'प्रभावशाली अर्थव्यवस्था' बनने के लिए तैयार है।

हमारे युवाओं की आतुरता और ऊर्जा में सृजन तथा बदलाव की चाहत छिपी है। इसी कारण उनमें प्रभावित करने की प्रबल प्रेरणा है, अपनाने की सहज प्रवृत्ति है और हमेशा बदलती नई तकनीकों की खोज करने का जुनून है। भारत में ऐसे आतुर और संभावित रूप से नवोन्मेषी व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक है। भारत की 10 से 20 वर्ष के आयु वर्ग की आबादी में ही लगभग 270 मिलियन रचनात्मक क्षमता वाले युवा हैं। हमारे युवाओं और हमारी क्रिएटर इकोनॉमी की इस क्षमता को पहचानते हुए, हमारे प्रधानमंत्री ने इस संगम के उत्सव की कल्पना की है, जिसे वेव्स (WAVES) कहा जाता है, जहाँ रचनात्मकता का तकनीकी नवाचार से मिलन होता है।

यह न केवल मौजूदा रचनात्मक तकनीकों का संगम है, बल्कि इसमें एआई जैसी नई तकनीकें भी शामिल हैं, जो एक गेम चेंजिंग तकनीक है और डिजिटल युग के आगमन से भी अधिक शक्तिशाली है। जिस तरह भारत ने डिजिटल अर्थव्यवस्था के विशाल आर्थिक लाभों को हमारी अर्थव्यवस्था के सबसे निचले तबके तक पहुँचाने में विश्व नेतृत्व किया, उसी तरह हमारे प्रधानमंत्री का भी सपना है कि भारत एआई में भी विश्व में अग्रणी बने, न केवल मल्टी बिलियन डॉलर के बुनियादी ढाँचे के स्तर पर, बल्कि इसकी शक्ति को हमारे आर्थिक स्तर के निचले पायदान पर उन लोगों तक पहुँचाए, जहाँ बदलाव की इच्छा और आवश्यकता एक ताकत है।

वेव्स भारत के युवा रचनाकारों को आने, मिलने तथा प्रतिस्पर्धा करने; खुद को संगठित करने, सीखने और यह देखने का आह्वान है कि कैसे क्रिएटर इकोनॉमी एक बड़ी और अधिक सुसंगत अर्थव्यवस्था में विकसित हो सकती है। वेव्स बड़े व्यवसायों, बड़े खिलाड़ियों के लिए क्रिएटिव इकोनॉमी में प्रवेश करने और उसे तेजी से विकास की ओर ले जाने का आह्वान है। लेकिन सबसे बढ़कर हमारे प्रधानमंत्री ने क्रिएटिव इकोनॉमी में विश्वास दिखाया है और भारत के युवाओं को दिखाया है कि उनकी रचनात्मकता को कितना महत्त्व दिया जाता है। यह शायद सही है कि क्रिएटिव इकोनॉमी की शक्ति का प्रचार करने वाला दुनिया का पहला कार्यक्रम भारत में हो रहा है। आखिरकार, भारत हमेशा से कहानीकारों की भूमि रहा है और आगे भी रहेगा।

वेव्स हमारे विदेशी मेहमानों, आमंत्रितों और उपस्थित लोगों के लिए भारत की क्रिएटिव इकोनॉमी का पता लगाने, उससे जुड़ने और परस्पर संवाद के लिए हाथ मिलाने का निमंत्रण है। इससे नई तकनीकों को सशक्त बनाने में सहायता मिलेगी जिससे भारत की क्रिएटिव इकोनॉमी को इसकी विस्फोटक वृद्धि क्षमता को साकार करने, उसमें भाग लेने, भागीदार बनने और इसे दुनिया तक ले जाने में सक्षमता हासिल होगी। यह भारत में आगमन और सृजन करने का निमंत्रण है।

KTB: एनीमेशन के ज़रिए स्वतंत्रता संग्राम के नायकों का सम्मान

आज के समय में तकनीक और डिजिटल माध्यम हमारी ज़िन्दगी में अहम भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे समय में भारतीय इतिहास और संस्कृति को बच्चों तक पहुँचाने के लिए कई अनूठे प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसा ही एक प्रयास है '**KTB**: भारत हैं हम'। यह लोकप्रिय एनिमेशन सीरीज़ बच्चों को बड़े दिलचस्प अंदाज़ में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन नायक-नायिकाओं की कहानियाँ बताती है, जिनके योगदान को इतिहास में अधिक जगह नहीं मिल सकी है।

'**KTB** : भारत हैं हम', एक शानदार और खूबसूरत एनिमेटेड मूवी सीरीज़ है। इसका उद्देश्य लोककला को पुनर्जीवित करना और बच्चों को भारत तथा दुनिया के विभिन्न हिस्सों की लोक कहानियों, लोक चित्रकला और लोक संगीत से परिचित कराना है।

तीन आकर्षक किरदार कृष (बंदर), तृष (बिल्ली) और बाल्टीबॉय (गधा) बच्चों को एक ऐसी रोमांचक यात्रा पर लेकर जाते हैं, जहाँ वे कलात्मक विविधता से रूबरू होते हैं। यह शानदार पेशकश दर्शकों को पूरी तरह से मोहित रखती है।

KTB का दूसरा सीज़न हाल ही में गोवा के **International Film Festival of India** में लॉन्च हुआ। इस सीज़न में उन स्वतंत्रता सेनानियों की गाथाएँ देखने को मिलेंगी, जिन्हें अब तक अपेक्षाकृत कम जगह मिल पाई है।

यह सीरीज़ कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में उपलब्ध है, जिससे इसकी पहुँच व्यापक हो गई है। कार्टून नेटवर्क पर प्रसारित इस सीरीज़ को 40 मिलियन बच्चों ने देखा है। यह नेटफ्लिक्स पर अंग्रेज़ी, चीनी, तुर्की और पोलिश भाषाओं में भी उपलब्ध है।

KTB भारतीय क्रिएटिव इंडस्ट्री का एक बेहतरीन उदाहरण है, जो तकनीक और कला के माध्यम से इतिहास को जीवंत कर रही है। यह पहल बच्चों को न केवल मनोरंजन प्रदान करती है, बल्कि उन्हें इतिहास और आदर्शों से भी जोड़ती है।

सिनेमाई हस्तियों को उनकी 100वीं जयंती पर श्रद्धांजलि

"साथियो, वर्ष 2024 में हम फिल्म जगत की कई महान हस्तियों की 100वीं जयंती मना रहे हैं। इन विभूतियों ने भारतीय सिनेमा को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई है। राजकपूर जी ने फिल्मों के माध्यम से दुनिया को भारत को सॉफ्ट पावर से परिचित कराया। रफी साहब की आवाज़ में वो जादू था जो हर दिल को छू जाता था। अक्किनेनी नागेश्वर राव गारू ने तेलुगु सिनेमा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। उनकी फिल्मों ने भारतीय परम्पराओं और मूल्यों को बखूबी प्रस्तुत किया। तपन सिन्हाजी की फिल्मों ने समाज को एक नई दृष्टि दी।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

राज कपूर

राज कपूर को 'भारतीय सिनेमा के महानतम शोमैन' के रूप में जाना जाता है। उनकी फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काफी लोकप्रियता हासिल की, खासकर सोवियत संघ, चीन और मध्य पूर्व में, जिसने भारतीय सिनेमा को वैश्विक स्तर पर एक सांस्कृतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया। 'आवारा हूँ' गाना भारतीय सीमाओं से परे आनंद और प्रशंसा का गीत बन गया। भारत सरकार ने उन्हें 1971 में पद्म भूषण और 1988 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया था।

मोहम्मद रफी

मोहम्मद रफी ने एक महान पार्श्व गायक के रूप में भारतीय सिनेमा में योगदान दिया। इन्होंने 40 साल के करियर में दिल को छू लेने वाली धुनों और रोमांटिक ट्रैक से लेकर देशभक्ति के गीतों और भजनों तक, 25,000 से अधिक गाने रिकॉर्ड किए। 1967 में उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने गीत 'क्या हुआ तेरा वादा' के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी जीता।

अक्किनेनी नागेश्वर राव

अक्किनेनी नागेश्वर राव (एएनआर) ने बायोग्राफिकल फिल्मों से लेकर रोमांटिक ड्रामा और पारम्परिक कथाओं तक की कई शैलियों को शामिल करते हुए 255 से अधिक फिल्मों में अभिनय करके तेलुगु सिनेमा में क्रांति ला दी। उन्हें प्रदान किए गए पुरस्कारों में दादा साहब फाल्के पुरस्कार (1990), पद्म श्री (1968), पद्म भूषण (1988) और पद्म विभूषण (2011) शामिल हैं।

तपन सिन्हा

तपन सिन्हा बंगाली फिल्म निर्माताओं में से एक थे। यह अपनी विचारोत्तेजक फिल्मों के लिए जाने जाते थे, जो समाज को एक नया नज़रिया देती थीं। काबुलीवाला, लौह-कपट, हाटे बाजारे जैसी उनकी फिल्मों के लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिले। उन्हें 1992 में पद्म श्री और 2006 में भारत सरकार द्वारा दादा साहब फाल्के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

बस्तर ओलम्पिक 2024

शांति, प्रगति और एकता की जीत

“क्या आप जानते हैं कि हमारे बस्तर में एक अनूठा ओलम्पिक शुरू हुआ है ! पहली बार हुए बस्तर ओलम्पिक से बस्तर में एक नई क्रांति जन्म ले रही है। मेरे लिए ये बहुत ही खुशी की बात है कि बस्तर ओलम्पिक का सपना साकार हुआ है। आपको भी ये जानकर अच्छा लगेगा कि यह उस क्षेत्र में हो रहा है, जो कभी माओवादी हिंसा का गवाह रहा है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

बस्तर
ओलंपिक
2024
करसाय ता बस्तर बरसाय ता बस्तर

छत्तीसगढ़ का बस्तर जिला दशकों से माओवादी विद्रोह के लिए जाना जाता है। यहाँ के समुदाय हिंसा, भय और अविश्वास के कुचक्र में फंसे हुए हैं। बस्तर ओलम्पिक ने एक ऐसा मंच बनाकर इस चक्र को तोड़ने की कोशिश की, जहाँ हिंसा के शिकार, आत्मसमर्पण करने वाले माओवादी और आम जनता एक साथ आ सकें।

अपने 117वें ‘मन की बात’ सम्बोधन में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव के प्रतीक के रूप में बस्तर ओलम्पिक की प्रशंसा की। उन्होंने इस आयोजन को आदिवासी युवाओं के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने और समाज की मुख्यधारा में शामिल होने के लिए एक मंच के रूप में आयोजित किया, जो ‘नए भारत’ के निर्माण में योगदान देगा।

उन्होंने कहा, “इस बस्तर खेल महाकुम्भ का मूल मंत्र है –

‘करसाय ता बस्तर बरसाय ता बस्तर’ यानि ‘खेलेगा बस्तर – जीतेगा बस्तर’।”

छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा इसी जिले में बस्तर ओलम्पिक 2024 का आयोजन किया गया था। इसकी शुरुआत 5 नवम्बर को बस्तर जिले के जगदलपुर मुख्यालय के बास्तानार ब्लॉक से हुई और यह बस्तर सम्भाग के सात जिलों– कांकेर, कोंडागाँव, बीजापुर, बस्तर, सुकमा, दंतेवाड़ा और नारायणपुर तक फैला। यह आयोजन 15 दिसम्बर, 2024 को केंद्रीय गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में बस्तर ओलम्पिक के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

गृहमंत्री अमित शाह ने इस बात पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री मोदी का मूल मंत्र ‘सभी के लिए खेल, उत्कृष्टता के लिए खेल’ है और सरकार बस्तर में इस विज़न को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बस्तर ओलम्पिक, 2024 में एथलेटिक्स, तीरंदाजी, बैडमिंटन, फुटबॉल, हॉकी, भारोत्तोलन, कराटे, कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल और रस्साकशी सहित कई खेल शामिल थे। 1,65,000 से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिस्पर्धा की और आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों ने इस मंच का इस्तेमाल एक नई शुरुआत के रूप में करते हुए पूरे उत्साह से भाग लिया।

पहाड़ी मैना और जंगली भैंसा इसका शुभंकर था। इसे बस्तर की भावना का प्रतीक माना जाता है। इस बहुविध खेल आयोजन का उद्देश्य स्थानीय प्रतिभाओं को खोजना, नक्सल प्रभावित बस्तर के आदिवासी युवाओं को मुख्यधारा में शामिल करना और लोगों तथा प्रशासन के बीच सम्बंधों को मजबूत करना था।

खेलों में कमजोर समूहों, खासकर युवाओं को शामिल करके ओलम्पिक

ने अलगाव और भय के लिए एक शक्तिशाली संहारक के रूप में काम किया। आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों को इस आयोजन के माध्यम से समाज में फिर से शामिल होने का एक दुर्लभ अवसर मिला, जिन्हें अक्सर विशेष शिविरों तक सीमित रखा जाता था। हालात से प्रभावित लोगों ने भी खेलों को अपनी स्वतंत्रता और सामूहिक प्रगति की भावना में योगदान देने के अवसर के रूप में देखा।

बस्तर ओलम्पिक पारम्परिक रूप से संघर्ष, गरीबी और उपेक्षा से हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए सशक्तीकरण के प्रतीक के रूप में सामने आया। दूरदराज के गाँवों से आए प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा दिखाने और अपनी क्षमता को फिर से प्रदर्शित करने के लिए एक मंच दिया गया, जो अक्सर मूल-भूत सुविधाओं वंचित रहते हैं।

कई लोगों के लिए यह प्रतिस्पर्धा में उतरने, उत्कृष्टता हासिल करने और सम्मानित होने का पहला मौका था। ओलम्पिक का यह समय जानबूझकर चुना गया था, जब माओवादी समूह पारम्परिक रूप से युवाओं को अपने पाले में लाने या उन्हें मजबूर करने का प्रयास करते हैं। खेलों में युवाओं को शामिल करके, इस पहल ने एक रचनात्मक विकल्प प्रदान किया। इससे क्षेत्र में विश्वास का माहौल बनाने और विकास को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों को बल मिला।

इसके अलावा खेलों ने बस्तर में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए

सरकार की प्रतिबद्धता को उजागर किया। दशकों से बंद पड़े स्कूल इस आयोजन के लिए समय पर फिर से खुल गए, जो शिक्षा, सामुदायिक निर्माण और आशा पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने का प्रतीक है।

प्रतिभागियों के बीच गर्व और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देना बस्तर ओलम्पिक के सबसे महत्त्वपूर्ण परिणामों में से एक था। हाशिए पर पड़े कई व्यक्तियों के लिए यह सिर्फ एक खेल आयोजन से कहीं अधिक देखा, सुना और मनाया जाने वाला एक दुर्लभ अवसर था। मैदान पर जीत व्यक्तिगत जीत में तब्दील हो गई, जिससे उन लोगों में आत्मविश्वास और उम्मीद पैदा हुई, जिन्हें लम्बे समय से अनदेखा किया गया था।

मैदान पर वे अब विरोधी नहीं, बल्कि टीम के साथी और प्रतिस्पर्धी थे, जो खेल की साझा भाषा से बंधे थे। इस अभूतपूर्व बातचीत ने समझ, सहानुभूति और सामंजस्य के बीज बोए, यह साबित करते हुए कि जब समुदाय एक साथ आते हैं तो सबसे गहरे घाव भी भरने लगते हैं।

बस्तर ओलम्पिक 2024 बस्तर और छत्तीसगढ़ के भविष्य के लिए एक नवीन दृष्टिकोण साबित हुआ। इसने दिखाया कि कैसे खेल सीमाओं को पार कर विकास को गति दे सकते हैं। संवेदनशील लोगों को सशक्त बनाकर और एकता को बढ़ावा दे, खेलों ने संघर्ष से प्रभावित क्षेत्रों में शांति-निर्माण की पहल के लिए एक नया मानदंड स्थापित किया।

भले ही खेल के बाद बस्तर के इलाकों की धूल बैठ गई है, किंतु ओलम्पिक से शुरू हुई आशा, मजबूती और चुनौतियों से ऊपर उठने की अडिग भावना अपना साकार रूप ले रही है।

बस्तर ओलम्पिक
खेलेगा भारत, जीतेगा भारत!

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 117वें एपिसोड में बस्तर ओलम्पिक के विजेताओं को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा, "...मेरे लिए ये बहुत ही खुशी की बात है कि बस्तर ओलम्पिक का सपना साकार हुआ है।...एथलेटिक्स, तीरंदाजी, बैडमिंटन, फुटबॉल, हॉकी, वेटलिफ्टिंग, कराटे, कबड्डी, खो-खो और वॉलीबॉल - हर खेल में हमारे युवाओं ने अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है।"

बस्तर ओलम्पिक केवल एक खेल आयोजन नहीं है, बल्कि प्रतिभा और विकास का एक मंच है, जो एक नए और जीवंत भारत की भावना को दर्शाता है। इन खिलाड़ियों की कहानियाँ, खेलों की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करती हैं, चुनौतियों को जीत में बदल देती हैं और युवाओं को दृढ़ता के साथ अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

पुनेम सन्ना, व्हीलचेयर पर दौड़कर जीता पदक

बस्तर ओलम्पिक में जहाँ पर नक्सल हिंसा में दिव्यांग हुए खिलाड़ियों ने अपने मजबूत इरादे के साथ उत्कृष्ट खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया, ऐसे ही नक्सली हिंसा को छोड़ मुख्यधारा में आए आत्मसमर्पित आरक्षक बने सुकमा जिले के पुनेम सन्ना ने भी व्हील चेयर में दौड़ लगाई। नक्सल हिंसा के कारण, अपने निजी जीवन में सन्ना ने काफी उतार-चढ़ाव का सामना किया। परन्तु अपने इरादों को टूटने नहीं दिया और इस बस्तर ओलम्पिक में भाग लिया।

"मैंने बस्तर ओलम्पिक में भाला फेंक खेल में हिस्सा लिया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में मेरा नाम लेते हुए तारीफ़ की, मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं कहना चाहती हूँ कि मोदीजी ऐसे ही प्रोत्साहित करते रहें ताकि गाँव के अंदर जो भी लोग रहते हैं, वे मैदान में उतरकर अपना टैलेंट दिखाएँ।"

पायल कवासी, बस्तर ओलम्पिक में भालाफेंक में जीता स्वर्ण पदक

"मुझे बहुत अच्छा लगा की माननीय प्रधानमंत्रीजी ने 'मन की बात' में सारी दुनिया के सामने मेरा जिक्र किया। मुझे बहुत खुशी हुई। सुविधा ना होने के कारण पढ़ाई के बाद मैं तीरंदाजी में भाग नहीं ले पाई मगर बस्तर ओलम्पिक के होने के कारण, मुझे पहली बार मौका मिला कि मैं फिर से तिरंदाजी कर पाई।"

कारी कश्यप, बस्तर ओलम्पिक में तीरंदाजी में जीता रजत पदक

"मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि गांव के क्षेत्र से निकलकर बस्तर ओलम्पिक के माध्यम से मैंने तीरंदाजी खेल में भाग लिया और वहाँ अच्छा प्रदर्शन किया। उसके माध्यम से मेरा नाम दिल्ली तक, हमारे प्रधानमंत्रीजी तक पहुँचा और उन्होंने मेरा नाम लिया। तो मुझे बहुत खुशी हुई कि गाँव के क्षेत्र से भी निकल कर भी हम बड़े खिलाड़ी बन सकते हैं। अच्छे काम में पार्टिसिपेट कर सकते हैं।"

रंजू सोरी, तीरंदाज, जिन्हें 'बस्तर युवा आइकन' चुना गया है

सभी के लिए स्वास्थ्य

आयुष्मान भारत से बदलता जीवन

डॉ. सी.एस. प्रमेश
एमएस, एफआरसीएस
निदेशक, टाटा मेमोरियल अस्पताल

भारत में मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण कैंसर है। इसके उपचार के परिणाम उचित और व्यापक चिकित्सा की समय पर उपलब्धता से जुड़े हैं– जो पहुँच, सामर्थ्य और गुणवत्ता का प्रतिफल है। उपचार की उच्च लागत और सबके लिए स्वास्थ्य चिकित्सा की कमी के कारण अधिकांशतः सामर्थ्य से अधिक खर्च होता है। कैंसर उपचार के लिए अस्पताल की लम्बी दूरी की यात्रा के कारण उपचार में देर होना अथवा उपचार न करना, आर्थिक साधन का अभाव और उच्च मृत्यु दर होती है, जिससे सबसे अधिक प्रभावित कमजोर वर्ग होते हैं।

'आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना' (एबी पीएम-जेएवाई), दुनिया की सबसे बड़ी सरकारी वित्त पोषित स्वास्थ्य आश्वासन योजना है। यह कम आय वाली और हाशिए पर रहने वाली आबादी को कैंसर के उपचार के लिए वित्तीय कवरेज प्रदान करके सामर्थ्य और पहुँच में अंतर को दूर करने में एक बड़ा कदम रही है। पात्र लाभार्थियों के नामांकन में आसानी, राष्ट्रीय स्तर पर इसे लागू करना, योजना में सार्वजनिक और निजी दोनों स्वास्थ्य सुविधाओं को शामिल करना, रोगियों द्वारा प्रारम्भिक भुगतान की आवश्यकता के बिना अस्पतालों को सीधा भुगतान, राज्यों के साथ लागत-साझाकरण कुछ अनूठी विशेषताएँ हैं, जिन्होंने अपने इस उद्देश्य को पूरा करने में 'आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना' की सफलता में योगदान दिया है, ताकि किसी को भी वहन क्षमता की कमी के कारण चिकित्सा से वंचित नहीं किया जा सके। पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों के लिए केंद्र द्वारा उच्च लागत साझाकरण ने भौगोलिक चुनौतियों के कारण इलाज में आ रही उन चुनौतियों का सामाधान ढूँढने का प्रयास किया है, जिनके कारण इन क्षेत्रों के निवासियों को कैंसर के इलाज के लिए विभिन्न शहरों में जाना मुश्किल होता है।

फोकस सिर्फ वित्तीय सहायता का प्रावधान करने पर नहीं है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण और उपयोगी चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर है। गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएँ सुनिश्चित करने के लिए, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) ने 'आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना' के तहत कैंसर स्वास्थ्य लाभ पैकेजों को राष्ट्रीय कैंसर ग्रिड (एनसीजी) द्वारा विकसित कैंसर उपचार दिशानिर्देशों की आवश्यक और इष्टतम श्रेणी के साथ जोड़ने के लिए राष्ट्रीय कैंसर ग्रिड के साथ भागीदारी की है। इस सहयोग के फलस्वरूप पैकेज में संशोधन किया गया, शामिल उपचारों की संख्या में वृद्धि की गई, साथ ही स्वास्थ्य लाभ पैकेजों (एच.बी.पी.) को युक्तिसंगत बनाया गया। अस्पतालों को शामिल करना, कैंसर चिकित्सा के लिए विशेषज्ञता और बुनियादी ढाँचे की उपलब्धता पर आधारित है। डिजिटल प्रणालियों के विकास ने लाभार्थी सत्यापन, पैकेज उपयोग की निगरानी और दावा निपटान प्रक्रिया को और मजबूत किया है। चूँकि भारत में कैंसर के लगभग दो-तिहाई रोगियों में इस बीमारी का पता तब चलता है जब वह बहुत गंभीर हो चुकी होती है, इसलिए पैलिएटिव केयर चिकित्सा अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है और इसे 'आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना' द्वारा मान्यता दी गई है, जिसमें जीवन बेहतर गुणवत्ता के लिए कुछ पैलिएटिव केयर चिकित्सा पैकेज शामिल किए गए हैं।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण ने स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के साथ काम करते हुए अधिकांश स्वास्थ्य सुविधाओं द्वारा स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए व्यवस्थित लागत विधियों का उपयोग करके पैकेजों के मूल्य निर्धारण को तर्कसंगत बनाने और सावधानीपूर्वक स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी मूल्यांकन के बाद पैकेजों में किसी भी उपाय को शामिल करने की प्रक्रिया भी शुरू की है, जो दोनों ही दुर्लभ संसाधनों के इष्टतम उपयोग की दिशा में काम करेंगे। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण ने स्वास्थ्य लाभ पैकेजों के नामकरण को विश्व स्वास्थ्य संगठन के अंतरराष्ट्रीय रोग वर्गीकरण (आईसीडी) कोडिंग और स्वास्थ्य उपायों के अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण के अनुरूप बनाने की प्रक्रिया भी शुरू की है।

संक्षेप में, 'आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना' ने उच्च गुणवत्ता वाली कैंसर चिकित्सा तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाया है, न केवल वंचितों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान की है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि पेश किए जाने वाले उपचार साक्ष्य-आधारित हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के तत्वावधान में राष्ट्रीय कैंसर ग्रिड के साथ करीबी साझेदारी करते हुए इस ऐतिहासिक योजना के निरंतर विकास ने कैंसर चिकित्सा सेवाओं में बदलाव लाने में मदद की है और भारत को 'सभी के लिए स्वास्थ्य' के सपने को वास्तविकता में बदलने में सक्षम बनाया है।

विदेशों में भारत की सांस्कृतिक छाप

वैश्विक सम्बंधों और विरासत की कहानियाँ

"...ये बातें, ये घटनाएँ सिर्फ सफलता की कहानियाँ नहीं है, ये हमारी सांस्कृतिक विरासत की गाथाएँ भी हैं। ये उदाहरण गर्व से भर देते हैं। आर्ट से आयुर्वेद तक और लैंग्वेज़ से लेकर म्यूज़िक तक, भारत में इतना कुछ है, जो दुनिया में छा रहा है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, सीमाओं को पार करती जा रही है, जीवन को छू रही है और दुनिया भर में रचनात्मकता, परिवर्तनशीलता और जुड़ाव की प्रेरक कहानियाँ पहुँचा रही है। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने अपने सम्बोधन में चर्चा की, मिस्र में एक 13 वर्षीय दिव्यांग कलाकार द्वारा अपने मुँह से ताजमहल की पेंटिंग बनाने से लेकर पैराग्वे में इंजीनियर से आयुर्वेद सलाहकार बनी महिला द्वारा समग्र उपचार के माध्यम से लोगों का जीवन बदलने तक और फिजी में 80 वर्षों के बाद तमिल भाषा की शिक्षा को पुनर्जीवित करने जैसी ये उल्लेखनीय कहानियाँ भारत की कला, ज्ञान और भाषा की सार्वभौमिक अपील को उजागर करती हैं।

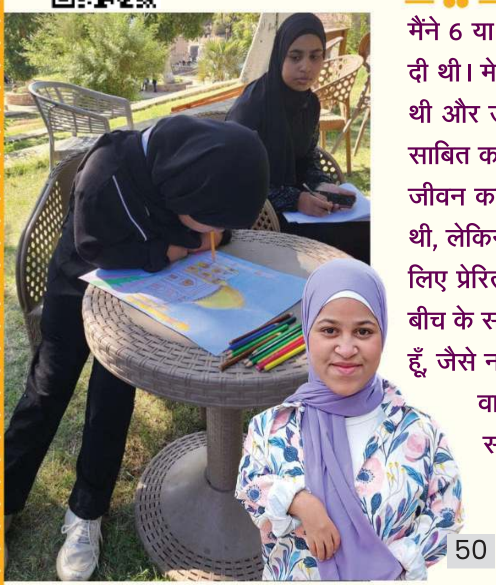

"मैंने 6 या 7 साल की उम्र में पेंटिंग करनी शुरू कर दी थी। मेरे परिवार को मेरी सरल पेंटिंग बहुत पसंद थी और उन्होंने मुझे खुद को बेहतर बनाने, खुद को साबित करने के लिए प्रोत्साहित किया कि पेंटिंग मेरे जीवन का हिस्सा है। कभी-कभी मैं उदास हो जाती थी, लेकिन दूसरों के प्रोत्साहन ने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मैं भारत में मानव और प्रकृति के बीच के समन्वय पर पेंटिंग बनाने के बारे में सोच रही हूँ, जैसे नदियाँ, मंदिर और भारतीय सजावट। भारत वास्तव में हर चीज में सादगी और सुंदरता का संयोजन है।"

-बसमाला मोहम्मद, तीसरे वर्ष की छात्रा
गमाल अब्देल नासर माध्यमिक विद्यालय,
असवान, सहारा, मिस्र

दक्षिण अमरीका के पैराग्वे में, एरिका ह्यूबर आयुर्वेद के माध्यम से भारतीय समृद्ध विरासत की एक मिसाल बन गई हैं। इंजीनियरिंग से समग्र स्वास्थ्य की भावना के मद्देनज़र अब वह पैराग्वे के भारतीय दूतावास में आयुर्वेदिक परामर्श प्रदान करती हैं, जिससे कई स्थानीय लोग प्रेरित हो रहे हैं! उनकी कहानी इस बात को रेखांकित करती है कि कैसे भारत की परम्पराएँ वैश्विक स्तर पर जुड़ती और फलती-फूलती हैं।

दुनिया की सबसे पुरानी भाषा तमिल, हर भारतीय का गर्व है। दुनिया भर में इसे सीखने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। फिजी में भारत सरकार के सहयोग से तमिल शिक्षण कार्यक्रम 80 वर्षों के बाद वहाँ तमिल शिक्षा की वापसी का प्रतीक है। प्रशिक्षित शिक्षक अब फिजी के विद्यार्थियों में भाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम पैदा कर रहे हैं। यह पहल वैश्विक स्तर पर अपनी भाषाई विरासत को संरक्षित करने की भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

मलेरिया उन्मूलन

भारत नवाचार को बढ़ावा देकर, समान पहुँच सुनिश्चित करके और मज़बूत जन जागरूकता अभियान चलाकर स्वास्थ्य सेवाओं में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर रहा है। इससे लम्बे समय से चली आ रही स्वास्थ्य चुनौतियों को जीत में बदला जा रहा है।

"असम में जोरहाट के चाय बागानों में मलेरिया चार साल पहले तक लोगों के लिए चिन्ता का एक बड़ी वजह बना हुआ था, लेकिन इसके उन्मूलन के लिए चाय बगान में रहने वाले एकजुट हुए, तो इसमें काफी हद तक सफलता मिलने लगी।

हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले ने भी मलेरिया को नियंत्रित करने के लिए एक बहुत अच्छा मॉडल पेश किया है। यहाँ मलेरिया की मोनेटिरिंग के लिए जनभागीदारी काफी सफल रही है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

असम के जोरहाट के चाय बागानों में मलेरिया कभी एक बड़ी चुनौती थी, जिससे अधिक संख्या में मौतें होती थीं। हालाँकि जागरूकता बढ़ाने, स्वच्छता को बढ़ावा देने, पानी के ठहराव को रोकने और मच्छरदानी के उपयोग को प्रोत्साहित करने सहित सामूहिक प्रयासों के माध्यम से, चाय बागानों के निवासियों ने सफलतापूर्वक इस समस्या का समाधान किया है। इससे वहाँ स्वस्थ और मलेरिया मुक्त समुदाय सुरक्षित जीवनयापन कर रहा है।

"प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में हमें जो सम्मान दिया है, उसके लिए मैं तहे दिल से बहुत आभारी हूँ। मलेरिया से निपटने के लिए हम अपने चाय बागानों में जो प्रयास कर रहे हैं, उस पर मुझे बहुत गर्व है।

बागान सचिव और महिला समितियों की सहायता से हमने गाँवों में बैठकें और सभाएँ आयोजित कीं। चाय बागानों में रहने वालों के लिए हमने एक समर्पित फेसबुक पेज और व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए जानकारी साझा की। जिले के गैर सरकारी संगठनों और बागान सचिवों ने जागरूकता बढ़ाने के लिए घर-घर जाकर काम किया। महिलाओं को शिक्षित करने और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए लाइन कमेटियाँ बनाई गईं। इन सामूहिक प्रयासों से हमें मलेरिया पर नियंत्रण पाने में सफलता मिली है।"

-बोंटी बोरूआ सैकिया, जोरहाट, असम

भारत की स्वास्थ्य यात्रा में मील का पत्थर

कुरुक्षेत्र जिला मलेरिया के खिलाफ़ लड़ाई में अग्रणी उदाहरण के रूप में उभरा है। पिछले कुछ वर्षों से यहाँ मलेरिया का कोई मामला सामने नहीं आया है। स्वास्थ्य विभाग, स्थानीय कार्यकर्ताओं और सहयोगी समुदायों के समर्पित प्रयासों से जिले ने मलेरिया उन्मूलन चरण में सतत प्रगति की है। लगातार अभियानों, त्वरित कार्रवाई रणनीतियों और जन जागरूकता पहलों के माध्यम से, कुरुक्षेत्र ने रोग वाहक बीमारियों के जोखिम को काफी हद तक कम कर दिया है, और अपने अनुकरणीय प्रदर्शन के लिए भारत सरकार से सम्मान प्राप्त किया है।

"हमारा जिला चार वर्षों से मलेरिया उन्मूलन चरण में है, और हमारा लक्ष्य ऐसी स्थिति बनाए रखना है कि कोई भी नया मामला न हो। हमने गाँवों और शहरों में मलेरिया से सम्बंधित गतिविधियों का संचालन करने वाली 125 टीमों का गठन किया है। ब्लॉक स्तर पर त्वरित कार्रवाई टीमों का गठन भी किया गया है। पिछले मलेरिया या डेंगू के मामलों वाले हॉटस्पॉट क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाती है। हमारी टीमें जागरूकता कार्यक्रमों और बड़े पैमाने पर बुखार सम्बंधी सर्वेक्षणों में शामिल होती हैं। ये पूरी आस्तीन के कपड़े पहनने, पानी के भंडारण का प्रबंधन करने और दरवाज़ों तथा खिड़कियों पर स्क्रीन लगाने जैसे निवारक उपायों को बढ़ावा देती हैं।"

-बिंदु राय, जिला महामारी विशेषज्ञ, कुरुक्षेत्र

"2022 से, जिले में मलेरिया का कोई भी मामला सामने नहीं आया है। हमारे कार्यकर्ता घर-घर जाकर सर्वेक्षण करते हैं, मच्छरों के लार्वा को नष्ट करते हैं और पानी के कंटेनरों को ढकने के लिए 'चुन्नी अभियान' जैसे उपायों के बारे में लोगों को शिक्षित करते हैं। हर प्रकार से तैयार सरकारी अस्पतालों और निजी प्रयोगशालाओं तथा अस्पतालों के साथ समन्वित प्रयास तत्काल रोग का पता लगाना और उपचार करना सुनिश्चित करते हैं, ताकि हमारी ज़ीरो केस की स्थिति बनी रहे।"

-डॉ. प्रदीप कुमार, जिला मलेरिया अधिकारी, कुरुक्षेत्र

सब्जियों के उत्पादन से कालाहांडी में बदलाव

ओडिशा के कालाहांडी में किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) खेती में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाने में जुटे हैं। कृष्ण चंद्र नाग और धनंजय नायक जैसे दूरदर्शी किसानों के नेतृत्व में ये एफपीओ आधुनिक खेती के संसाधन, तकनीकी सहायता और बाज़ार तक सीधी पहुँच प्रदान करते हैं। उनके प्रयासों से छोटे और सीमांत किसान लाभान्वित हो रहे हैं। शुरुआत में कुछ एक किसान इस संगठन से जुड़े, किंतु, यह संगठन अब 200 से अधिक किसानों का एक बड़ा नेटवर्क बन गया है, जिसमें 45 महिला किसान शामिल हैं। ये किसान टमाटर, मिर्च और करेला जैसी अधिक मूल्य वाली सब्जियाँ उगा रहे हैं।

इस पहल से बिचौलियों की भूमिका समाप्त हो गई है, साथ ही किसानों को उचित मूल्य मिलने लगा है और उनका मुनाफ़ा बढ़ गया है। नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) और भारत सरकार के समर्थन से ये एफपीओ न केवल आजीविका में सुधार कर रहे हैं, इन प्रयासों से इस इलाके से लोगों का पलायन रुका है और शिक्षा को भी बढ़ावा मिला है। अन्य लोग भी ऐसा करने के लिए प्रेरणा ले कर रहे हैं।

"मैंने 2006 में मिर्च की खेती शुरू की और पहले वर्ष में 2.6 लाख रुपये अर्जित किए। इन वर्षों में, मेरे प्रयास बढ़ते गए और 2022 तक मेरा कारोबार बढ़कर 1 करोड़ 42 लाख रुपये हो गया और मैंने 85 लाख रुपये का शुद्ध लाभ कमाया।

हालाँकि मुझे एहसास हुआ कि अकेले मेरी सफलता पर्याप्त नहीं थी। मेरा सपना हमारे ब्लॉक और जिले के अन्य किसानों का उत्थान करना था, उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाना था। इस दृष्टि से, मैंने किसानों को एक साथ लाने का फैसला किया और उन्हें टमाटर, मिर्च और करेला जैसी लाभदायक फसलें उगाने में मदद की।

इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मैंने एक सरकारी परियोजना के तहत नाबार्ड के सहयोग से एक एफपीओ बनाया। मुझे एफपीओ का एमडी नियुक्त किया गया, जिसमें अब 10 बोर्ड सदस्य हैं। इस एफपीओ के माध्यम से हम किसानों को बीज, कीटनाशक, उर्वरक और पौधे उपलब्ध कराते हैं, साथ ही आधुनिक कृषि तकनीक, सिंचाई, ग्रेडिंग और पैकेजिंग में उचित प्रशिक्षण भी देते हैं। एफपीओ उनकी उपज के लिए समुचित बाज़ार पहुँच भी सुनिश्चित करता है। इससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हो गई है, जो पहले कम कीमतों की पेशकश करके किसानों का शोषण करते थे। इस पहल ने किसानों को पहले की तुलना में 2-3 गुना अधिक कमाने में मदद की है। इससे उन्हें खेती जारी रखने और अपनी आजीविका में सुधार करने के लिए प्रेरणा मिली है।"

कृष्ण चंद्र नाग
सांचे गाँव, कालाहांडी, ओडिशा

एफपीओ ने अगले साल तक किसानों की संख्या को 2,000 से अधिक करने की योजना बनाई है। यह संगठन किसानों को बीज और उर्वरक जैसी आवश्यक सामग्री प्रदान करने के साथ-साथ खेती की आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण देता है। एफपीओ ने बाज़ार तक सीधी पहुँच प्रदान करके, किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलना सुनिश्चित कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप इन किसानों की आय दोगुनी या तिगुनी हो गई है। ओडिशा सरकार और भारत सरकार के सहयोग से यह सफलता सम्भव हुई है।

मैंने 50 डेसीमल जमीन पर खेती शुरू की, लेकिन एफपीओ के समर्थन से मैंने इसे 17 एकड़ तक बढ़ाया। पहले टमाटर बेचना एक बड़ी चुनौती थी। अब एफपीओ के माध्यम से व्यापारी सीधे हमसे खरीदने आते हैं।

मैं एफपीओ का बोर्ड सदस्य हूँ और अब व्यापारी नियमित रूप से टमाटर जैसी उपज सीधे हमसे खरीदते हैं। इससे पूरी प्रक्रिया सुव्यवस्थित हुई है और सभी किसानों के लिए उचित मूल्य और बाज़ार तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित हुई है।"

–धनंजय नायक, धमनपुर गाँव, ओडिशा

"मैं 2.5 एकड़ में कपास उगाता था, लेकिन खर्चों के बाद सालाना केवल एक लाख रुपये कमा पाता था। कृष्ण चंद्र नाग ने मुझे सब्जी की खेती करने की सलाह दी। पहले तो मैं हिचकिचा रहा था, लेकिन जब मैंने लाभ देखा, तो मैंने 2-4 लाख रुपये निवेश करने का फैसला किया।

इस साल मैंने कपास की खेती की तुलना में लगभग 10 गुना अधिक कमाया। एफपीओ हमारी उपज का विपणन और बिक्री करता है और व्यापारी अब हमारे दरवाजे पर आते हैं। मेरे लिए खेती बहुत अधिक लाभदायक और कम तनावपूर्ण हो गई है।"

–दिनेश कुमार साहू, सांचे गाँव, कालाहांडी, ओडिशा

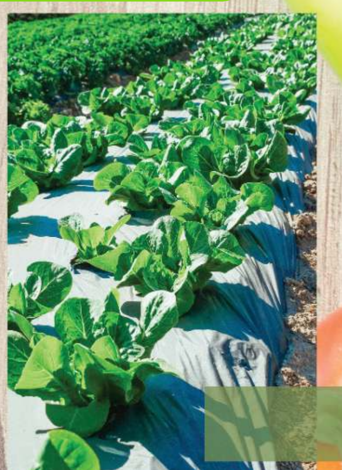

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Akshay Kumar @akshaykumar

Now this is PM @narendramodi ji's vision towards promoting the Media & Entertainment sector. Quite a wonderful idea. Waves 2025 summit will hopefully be a fabulous global forum to have the entire entertainment industry come and grow together.

> **Narendra Modi** @narendramodi · Dec 29, 2024
> In 2025, India is all set to welcome people from all across the world for WAVES, a film and entertainment world summit! #MannKiBaat

Amit Shah @AmitShah

मोदी जी ने आज #MannKiBaat में 'बस्तर ओलंपिक' की चर्चा करते हुए कहा कि कभी माओवादी हिंसा का गढ़ रहे बस्तर क्षेत्र में पहली बार आयोजित इस ओलंपिक से नई क्रांति जन्म ले रही है। यह एक ऐसा मंच है, जहाँ विकास व खेल का संगम हो रहा है और युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिल रहा है।

Translate post

CMO Haryana @cmohry

"मन की बात" कार्यक्रम से जिस तरह के विषय जुड़े होते हैं, उससे हम सभी को प्रेरणा मिलती है: मुख्यमंत्री @NayabSainiBJP

Translate post

chaitanya akkineni @chay_akkineni

Thank you Shri Modi ji @narendramodi for your wonderful words about ANR Garu's artistic merit and his efforts that have played a key role in shaping the brilliant Telugu film industry as we know it today. Means a lot to hear these words from a stalwart like you! Blessed and immensely grateful 🙏

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

26 जनवरी 2025 को हमारा संविधान 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पूरी करेगा। इस ऐतिहासिक अवसर को मनाने और नागरिकों को संविधान की विरासत से जोड़ने के लिए देशभर में कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इसी दिशा में constitution75.com एक अनूठा प्रयास है। मैं युवा साथियों से आग्रह करता हूँ कि इस वेबसाइट पर जरूर जाएँ और अपनी भाषा में संविधान की प्रस्तावना पढ़ते हुए अपना वीडियो अपलोड करें। इस वेबसाइट पर आपको संविधान से जुड़े रोचक तथ्य और अपने सवालों के जवाब भी मिलेंगे। #MannKiBaat

Translate post

Dr Harsh Vardhan @drharshvardhan

वाकई में इतने वर्षों से चले आ रहे #MannKiBaat के द्वारा भारतीय समाज को आपने जो प्रेरणा दी है, वह वाकई में अद्भुत है आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी...

@PMOIndia @BJP4India @BJP4Delhi

Translate post

Dr Raman Singh @drramansingh

बस्तर ओलंपिक सिर्फ खेलों का आयोजन नहीं है बल्कि यह हमारे युवाओं की प्रतिभा को मंच देने और उनके सपनों को उड़ान देने की पहल है।

आज माननीय प्रधानमंत्री श्री @Narendramodi ने #Mannkibaat कार्यक्रम में #BastarOlympics का उल्लेख करके न केवल खेल से स्वस्थ जीवन को जोड़ने के लिए प्रेरित किया है बल्कि बस्तर के खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन भी किया है।

Translate post

Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank @DrRPNishank

महाकुंभ का संदेश, एक हो पूरा देश।

#MannKiBaat

Dr Jitendra Singh @DrJitendraSingh

'आयुष्मान भारत योजना' की वजह से cancer के 90 प्रतिशत मरीज, समय पर अपना इलाज शुरू करा पाए हैं।

- प्रधानमंत्री श्री @narendramodi.

#MannKiBaat

Translate post

Harsh Sanghavi @sanghaviharsh

Let's wrap up the year on a positive and inspiring note.
Tune in to Hon'ble PM Shri @narendramodi ji's Mann Ki Baat at 11 AM today and hear his **thoughtful reflections, vision, and message for the nation as we step into the new year with hope and determination.**

A great opportunity to draw motivation and positivity for the days ahead. **Don't miss it!**

Himanta Biswa Sarma @himantabiswa

The malaria eradication efforts in the tea gardens of Jorhat reflect the power of innovation and community action. By leveraging technology and the reach of social media, we have made significant strides in improving public health for those who form the backbone of Assam's tea industry.

I express my heartfelt gratitude to the Hon PM Shri @narendramodi Ji for recognising this initiative in #MannKiBaat today.

@PMOIndia

K.Annamalai @annamalai_k

In the 117th episode of #MannKiBaat, our Hon PM Thiru @narendramodi avl spoke about how, with the support of the Government of India, the world's most ancient language, Tamil, is being taught in Fiji & was happy to note how the people of Fiji have embraced the learning of Tamil.

KhushbuSundar @khushsundar

Yet another milestone in entertainment industry. 🙏🙏🙏

> **Narendra Modi** @narendramodi · Dec 29, 2024
> In 2025, India is all set to welcome people from all across the world for WAVES, a film and entertainment world summit! #MannKiBaat

Kiren Rijiju @KirenRijiju

भारत की creative talent को दुनिया के सामने रखने का एक बहुत बड़ा अवसर आ रहा है। अगले साल हमारे देश में पहली बार World Audio Visual Entertainment Summit यानि WAVES summit का आयोजन होने वाला है: माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate post

Piyush Goyal @PiyushGoyal

महाकुंभ का संदेश, एक हो पूरा देश,
गंगा की अविरल धारा, न बंटे समाज हमारा।

#MannKiBaat

Translate post

Ranganathan Madhavan @ActorMadhavan

So very true and thank you so much Shri Modi Ji @narendramodi for this acknowledgment. It's a great responsibility and a Huge encouragement . and I hope we continue to bring in great pride to our nation and boost the soft power capabilities of this industry tremendously in the very near future. 🙏🙏🙏🇮🇳🇮🇳

Narendra Modi @narendramodi · Dec 29, 2024

India takes immense pride in the film and entertainment industry, which boosts our economy and enhances our soft power. #MannKiBaat

Sanjay Dutt @duttsanjay

India leading the way in entertainment and innovation! Congratulations to PM @narendramodi ji on this visionary initiative. WAVES 2025 will be fantastic platform for global collaboration. Excited to witness this revolution in the film and media world.

Narendra Modi @narendramodi · Dec 29, 2024

In 2025, India is all set to welcome people from all across the world for WAVES, a film and entertainment world summit! #MannKiBaat

Shivraj Singh Chouhan @ChouhanShivraj

अगले महीने 13 तारीख से प्रयागराज में महाकुंभ भी होने जा रहा है। इस समय वहां संगम तट पर जबरदस्त तैयारियां चल रही हैं।

महाकुंभ की विशेषता केवल इसकी विशालता में ही नहीं है, कुंभ की विशेषता इसकी विविधता में भी है।

अनेकता में एकता का ऐसा दृश्य विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा। इसलिए हमारा कुंभ एकता का महाकुंभ भी होता है। इस बार का महाकुंभ भी एकता के महाकुंभ के मंत्र को सशक्त करेगा।

– आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate post

Vinod Tawde @TawdeVinod

हमारा संविधान गाइडिंग लाइट है। देश के नागरिकों को संविधान की विरासत से जोड़ने के लिए constitution75.com वेबसाइट बनाई गई है। इसमें आप संविधान की प्रस्तावना पढ़कर अपनी वीडियो अपलोड कर सकते हैं। यहां आप अलग-अलग भाषाओं में संविधान पढ़ सकते हैं।

-प्रधानमंत्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate post

महाकुंभ में पहली बार होगा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल

नई दिल्ली(ए)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में महाकुंभ का जिक्र किया। उन्होंने महाकुंभ को एकता का महाकुंभ बताया। साथ ही उन्होंने लोगों से इस आगामी भव्य धार्मिक समागम से समाज से नफरत और विभाजन को खत्म करने के संकल्प के साथ लौटने का आग्रह किया। पीएम मोदी ने यह भी बताया कि पहली बार महाकुंभ में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल होगा। इसके अलावा पीएम ने संविधान का भी जिक्र किया और कहा कि यह समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है।

अनेकता में एकता का ऐसा दृश्य विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा–महाकुंभ का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा, महाकुंभ की विशेषता केवल इसकी विशालता में ही नहीं है, कुंभ की विशेषता इसकी विविधता में भी है। इस आयोजन में करोड़ों लोग एक साथ एकत्रित होते हैं। लाखों संत, हजारों परम्पराएं, सैकड़ों संप्रदाय, अनेकों अखाड़े, हर कोई इस आयोजन का हिस्सा बनता है। कहीं कोई भेदभाव नहीं दिखता है, कोई बड़ा नहीं होता है, कोई छोटा नहीं होता है। अनेकता में एकता का ऐसा दृश्य विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा।

पीएम ने आगे कहा, पहली बार कुंभ आयोजन में एआई–चैटबोट का प्रयोग होगा। इससे 11 भारतीय भाषाओं में कुंभ से जुड़ी हर तरह की जानकारी हासिल की जा सकेगी। इस चैटबोट से कोई भी टेक्स्ट टाइप करके या बोलकर किसी भी तरह की मदद मांग सकता है।

ਭਾਰਤੀ ਸੰਵਿਧਾਨ ਸਮੇਂ ਦੀ ਹਰ ਕਸੌਟੀ 'ਤੇ ਖਰਾ ਉਤਰਿਆ-ਮੋਦੀ

• ਏਕਤਾ 'ਚ ਅਨੇਕਤਾ ਹੈ ਮਹਾਂਕੁੰਭ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ • 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' 'ਚ ਕੀਤਾ ਸੰਬੋਧਨ

मलेरिया-कैंसर से जंग में देश ने हासिल की अहम उपलब्धि

मन की बात : पीएम ने कहा-संक्रामक बीमारी से मौतें 80% घटीं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मलेरिया और कैंसर से लड़ाई में देश की उपलब्धियां दुनिया का ध्यान खींच रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट कहती है कि भारत में 2015 से 2023 के बीच मलेरिया के मामलों और इससे होने वाली मौतों में 80 प्रतिशत की कमी आई है। यह सफलता जन-जन की भागीदारी से मिली है। यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है, क्योंकि एक महीने से लेकर पांच साल तक के बच्चों की जान लेने वाली सभी संक्रामक बीमारियों में मलेरिया का तीसरा स्थान है। दूसरी उपलब्धि, कैंसर से लड़ाई में मिली है।

मेडिकल जर्नल लैंसेट के अध्ययन के अनुसार, अब भारत में समय पर कैंसर का इलाज शुरू होने की संभावना काफी बढ़ गई है। कैंसर मरीज का इलाज अब 30 दिनों के अंदर ही शुरू हो जाता है, जिसमें बड़ी भूमिका निभाई है आयुष्मान भारत योजना ने। इस योजना की वजह से कैंसर के 90 प्रतिशत मरीज समय पर अपना इलाज शुरू करा पाए हैं। इस योजना ने इलाज में खर्च की परेशानी को काफी हद तक कम किया है।

कालाहांडी में हो रही सब्जी क्रांति

पीएम ने कहा कि ओडिशा के कालाहांडी कम पानी और कम संसाधनों के बावजूद सफलता की नई गाथा लिख रहा है। यह गाथा है कालाहांडी की सब्जी क्रांति। कालाहांडी का गोलामुंडा ब्लॉक सब्जी हब बन गया है। 10 किसानों के एक समूह ने मिलकर 'किसान उत्पाद संघ' की स्थापना की और खेती में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल शुरू किया। आज इनका एफपीओ करोड़ों का कारोबार कर रहा है। अब 200 से अधिक किसान इससे जुड़े हैं। इनमें 45 महिला किसान भी हैं।

- ये लोग मिलकर 200 एकड़ में टमाटर, 150 एकड़ में करेले का उत्पादन कर रहे हैं। अब इसका सालाना टर्नओवर भी बढ़कर डेढ़ करोड़ से ज्यादा हो गया है।

મન કી બાતના ૧૧૭ એપિસોડમાં બોલ્યા વડાપ્રધાન મોદી

આપણું બંધારણ સમયની દરેક કસોટી પર ખરું ઉતર્યું: વડાપ્રધાન

મહાકુંભની વિશેષતા માત્ર તેની વિશાળતામાં જ નથી પરંતુ તેની વિવિધતામાં પણ રહેલી છે : આ પ્રસંગમાં કરોડો લોકો એકઠા થાય છે : નરેન્દ્ર મોદી

'Create in India', next big slogan to fuel $5-trillion vision

In his latest *Mann Ki Baat* episode, PM Modi invites participation in upcoming WAVES event

KR Srivats
New Delhi

Year 2025 will be big on 'Create in India', going by Prime Minister Narendra Modi's end of the year *Mann Ki Baat* radio show. In his address on the 117th episode of the monthly radio show, Modi said that the creator economy is bringing new energy to achieve India's $5-trillion economy milestone.

Speaking extensively about the content creator industry, he called upon youth as well as established personalities of the media and entertainment industry to participate in the upcoming World Audio Visual Entertainment Summit (WAVES) that will be held in New Delhi in the first week of February 2025.

The Prime Minister highlighted that WAVES would be a "great opportunity" to showcase India's creative talent to the world.

"In the WAVES summit, giants from the media and entertainment industry and people from the creative world will come to India. This summit is an important step towards making India a hub of global content creation," said Modi.

Significantly, a host of celebrities (like actor Madhavan) and influencers (like singer Sumonto Mukherjee) have been pushing the WAVES Summit through their handles on social media for a while now, talking about a variety of contests that creators can take part in.

From re-imagined classic films poster making contests to a reel making competition, a battle of bands challenge to an animation filmmakers competition, there are at least 25 challenges to push Create in India.

CREATIVE SPARK. In his address, Narendra Modi highlighted the popularity of animation films, regular films and TV serials to exhibit the potential of India's creative industry

ANIMATION FILMS

In his radio show, Modi highlighted the popularity of animated films, citing the popular kids show *KTB-Bharat Hain Hum* as an example.

"KTB means Krish, Trish and Baltiboy. These three animation characters tell us about those heroes and bravehearts; men and women associated with the Indian freedom struggle who are not discussed much."

Modi also hailed legendary actor Raj Kapoor and other film personalities such as Mohammed Rafi, Akkineni Nageswara Rao, Tapan Sinha, for spreading the message of India as a soft power through their work.

Significantly, in 2024, the government introduced the first National Creators Award.

WAVES, which along with the contests and networking sessions will also see a Bazaar or a global e-marketplace for the media and entertainment industry, is clearly giving a bigger push to the "Create in India" story.

'मन की बात' में बोले PM, संविधान की वजह से ही आज यहां हूं

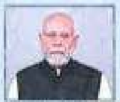

बस्तर में ओलिंपिक्स पर भी बात

FINAL MANN KI BAAT RADIO ADDRESS OF 2024

Constitution guiding light; Maha Kumbh's message is unity: Modi

EXPRESS NEWS SERVICE
New Delhi, December 29

INDIA'S CONSTITUTION HAS stood the test of time and it is the country's guiding light, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday in the year's final episode of the Mann Ki Baat radio address.

"On January 26, it will be 75 years since our Constitution was adopted. It is a matter of immense pride for all of us. The Constitution that our Constitution makers gave us has stood the test of time. The Constitution is a guiding light for us, it is our guide. It is because of India's Constitution that I am here today and am able to talk to you," he said.

The Prime Minister said that to commemorate the 75th anniversary of the Constitution's adoption, a year-long series of activities commenced on November 26, Constitution Day. He said a new website designed to "connect citizens with the legacy of the Constitution" – constitution75.com.

"On this, you can read the Preamble of the Constitution and upload your videos. You can read the Constitution in different languages, you can ask questions about the Constitution," he said.

An aerial view of Sangam — the confluence of the Ganges, Yamuna & the Saraswati — ahead of Maha Kumbh in Prayagraj on Sunday. Preparations are underway for the festival

Modi also referred to the upcoming Maha Kumbh at Prayagraj and said the Maha Kumbh's message is to "unite the entire country".

Modi said, "From the 13th of next month, at Prayagraj, the Maha Kumbh is going to be held. Preparations are underway. When I visited Prayagraj a few days ago...so massive and beautiful, such grandeur. The specialty of Maha Kumbh is not just in its vastness, it is also in its diversity. Crores of people gather for this – lakhs of priests, communities, akharas, everybody becomes a part of this. There is no discrimination, nobody is big or small. Such unity in diversity is not seen anywhere else in the world. This is why our kumbh is the Maha Kumbh of unity."

The Prime Minister said a digital navigation system will help devotees visit different ghats, temples and akharas, and an AI chatbot will have all the Kumbh-related information in 11 Indian languages. He said the area is being covered by AI-powered cameras.

For the first time, India will host the World Audio Visual and Entertainment Summit (WAVES) next year, which is a step towards turning the country into a "global content-creation hub", Modi said.

Comparing the WAVES to global events like the World Economic Forum in Davos, he said the leaders from the media and entertainment industry as well as creative minds from across the globe will gather in Delhi for the Summit being held from February 5-9.

The Prime Minister emphasised the pivotal role of young creators in the preparations for WAVES, reflecting the dynamic spirit of India's creative community.

મન કી બાતમાં વડા પ્રધાન મોદીએ કુંભની ભવ્ય તૈયારીઓ વિશે ચર્ચા કરી

મહાકુંભ કા સંદેશ, એક હો પૂરા દેશ

કુંભમાં ભાગ લેવાની સાથે સમાજમાં વિભાજન અને નફરતની ભાવનાને ખતમ કરવાનો સંકલ્પ લેવામાં આવે

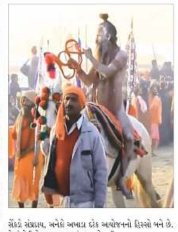

ہندوستان کو ملیریا اور کینسر سے لڑنے میں ملی بڑی کامیابی: مودی

महाकुम्भ का संदेश, एक हो पूरा देश : मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को महाकुम्भ को एकता का महाकुम्भ बताया। उन्होंने कहा कि महाकुम्भ का संदेश, एक हो पूरा देश। उन्होंने लोगों से इस धार्मिक समागम से समाज से नफरत और विभाजन को खत्म करने के संकल्प के साथ लौटने का आग्रह किया।

प्रधानमंत्री ने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात से प्रयागराज में 13 जनवरी से आयोजित होने जा रहे महाकुम्भ को लेकर एकता के दो संदेश भी दिए। उन्होंने कहा, 'महाकुम्भ का संदेश, एक हो पूरा देश।' साथ ही कहा, 'गंगा की अविरल धारा, न बंटे समाज हमारा।' मोदी ने कहा कि विविधता में एकता के ऐसे दृश्य का कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। इस आयोजन में करोड़ों लोग जुटते हैं। संत, हजारों परंपराएं, सैकड़ों संप्रदाय और कई अखाड़े इसका हिस्सा बनते हैं। अनेकता में एकता का ऐसा दृश्य विश्व में कहीं और नहीं दिखेगा। इसलिए हमारा कुम्भ एकता का महाकुम्भ भी है। मोदी ने कहा, इस बार का महाकुम्भ एकता के महाकुम्भ के मंत्र को और मजबूत करेगा। जब हम कुम्भ में भाग लें, तो एकता का संकल्प लेकर चलें।

भारत वैश्विक कंटेंट निर्माण का केंद्र बनेगा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 2024 में राज कपूर और मोहम्मद रफी सहित कई महान फिल्मी हस्तियों की 100वीं जयंती मनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि भारत की रचनात्मक प्रतिभा को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने का एक बड़ा अवसर आने वाला है। अगले वर्ष पहली बार देश में विश्व ऑडियो विजुअल एंटरटेनमेंट सम्मेलन यानि वेव्स का आयोजन होने जा रहा है।

من کی بات: آئین ہمارا رہنما ہے: وزیراعظم مودی

Modi announces a series of events to mark 75 years of Constitution

In his monthly *Mann Ki Baat* radio address, PM says the Constitution is 'our guiding light, our guide', asks people to visit a special website named constitution75.com, says there has been an 80% reduction in the number of malaria cases, deaths

కాలపరీక్షను తట్టుకొన్న రాజ్యాంగం

- నేను ఈ స్థితికి ఎదగడానికి అదే కారణం
- దేశ ఐక్యతను చాటమన్న కుంభమేళా
- 'మన్ కీ బాత్'లో ప్రధాని మోదీ

తెలుగు సినిమా స్థాయిని పెంచిన అక్కినేని

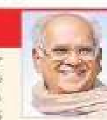

प्रशंसा प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में बस्तर ओलंपिक को सराहा

बस्तर ओलंपिक में विकास और खेल का हो रहा संगम

रायपुर, (आरएनएन)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात की 117वीं कड़ी में देश को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा आयोजित बस्तर ओलंपिक-2024 की प्रशंसा की। मोदी ने कहा पहली बार हुए बस्तर ओलंपिक से बस्तर में नई क्रांति जन्म ले रही है। मेरे लिए यह बहुत ही खुशी की बात है कि बस्तर ओलंपिक का सपना साकार हुआ है। यह ओलंपिक उस क्षेत्र में हो रहा है जो जगह कभी माओवादी हिंसा का गवाह रहा है।

मोदी ने कहा कि बस्तर ओलंपिक का शुभंकर है वनभैंसा और पहाड़ी मैना - इसमें बस्तर की समृद्ध संस्कृति की झलक दिखती है। इस बस्तर खेल महाकुंभ का मूलमंत्र है, 'करसाय ता बस्तर, बरसाय ता बस्तर' यानी खेलेगा बस्तर, जीतेगा बस्तर।

प्रधानमंत्री मोदी ने बस्तर ओलंपिक-2024 की सराहना करते हुए कहा कि पहली ही बार में बस्तर ओलंपिक में बस्तर संभाग के 7 जिलों के एक लाख 65 हजार खिलाड़ियों ने भाग लिया है। यह सिर्फ एक आंकड़ा नहीं युवाओं के संकल्प की गौरव गाथा है। प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात में बस्तर ओलंपिक के प्रतिभागियों के उत्साह का भी जिक्र किया। उन्होंने बस्तर की कारी कश्यप का जिक्र करते हुए कहा कि एक छोटे से गांव से आने वाली कारी जी ने तीरंदाजी में रजत पदक जीता है, वे कहती हैं बस्तर ओलंपिक ने हमें खेल का मैदान नहीं जीवन में आगे बढ़ने का अवसर दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि सुकमा की पायल कवासी जी की बात भी कम प्रेरणादायक नहीं है, जैवलिन थ्रो में स्वर्ण पदक जीतने वाली पायल जी कहती हैं कि अनुशासन और कड़ी मेहनत से जीवन में कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। बस्तर ओलंपिक केवल एक खेल आयोजन नहीं यह ऐसा मंच है जहां विकास और खेल का संगम हो रहा है, जहां हमारे युवा अपनी प्रतिभा को निखार रहे हैं और एक नए भारत का निर्माण कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री साय ने प्रदेशवासियों की ओर से जताया आभार

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने एक्स पर ट्वीट कर प्रधानमंत्री का आभार जताते हुए कहा की यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी, 'बस्तर ओलंपिक' के सफल आयोजन पर आपके प्रोत्साहन और प्रेरणादायी उद्बोधन हेतु समस्त प्रदेशवासियों की ओर से सहृदय आभार। आपके कुशल मार्गदर्शन में हमारी सरकार बस्तर में बदलाव और वहाँ के लोगों के जीवन में खुशहाली लाने संकल्पित है। बस्तर ओलंपिक में 1.65 लाख से अधिक लोगों का प्रतिभाग करना ओलंपिक की सफलता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि सुकमा की पायल कवासी, दंतेवाड़ा के पुनेम सन्ना, कोंडागांव के तीरंदाज रंजू सोरी और कारी कश्यप ने अपनी बेहतरीन खेल प्रतिभा से मैडल जीता और बस्तर का मान बढ़ाया है। बस्तर में अब बंदूक की आवाज नहीं, खेलों की शोर सुनाई देती है, हंसते-खेलते लोगों के चेहरे दिखाई देते हैं। निश्चित ही आपके इस प्रोत्साहन और विश्वास से हमारी सरकार को बस्तर की प्रगति के लिए कार्य करने की और ऊर्जा मिलेगी साथ ही बस्तरवासियों का मनोबल बढ़ेगा। पुनः हार्दिक आभार।

ଦାଦନ ଗଡ଼ରେ ପରିବା କ୍ରାନ୍ତି

'ମନ୍ କୀ ବାତ୍'ରେ କଳାହାଣ୍ଡି ଚାଷୀଙ୍କୁ ପ୍ରଶଂସା

- ସମଗ୍ର ଦେଶ ପାଇଁ ଉଦାହରଣ: ମୋଦି
- ଅନ୍ୟ ରାଜ୍ୟର ଚାଷୀଙ୍କୁ ଶିଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ
- ଏଫ୍‌ପିଓରେ ସାମିଲ ଅଛନ୍ତି ୨୦୦ ଚାଷୀ
- ୩୫୦ ଏକରରେ ଟମାଟୋ, କଲରା ଚାଷ

ନୂଆଦିଲ୍ଲୀ/ଭବାନୀପାଟଣା,୨୯।୧୨ (ଏଜେନ୍ସି/ଅପ୍ର): ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ନରେନ୍ଦ୍ର ମୋଦି ନିଜ ମାସିକ ରେଡିଓ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ 'ମନ୍ କୀ ବାତ୍'ର ୧୧୭ତମ ସଂସ୍କରଣରେ ରବିବାର ଓଡ଼ିଶାର କଳାହାଣ୍ଡି ଜିଲ୍ଲାର ଚାଷୀମାନଙ୍କୁ ଭୂୟସୀ ପ୍ରଶଂସା କରିଛନ୍ତି। ସେମାନେ କିଭଳି କୃଷକ ଉତ୍ପାଦ ସଙ୍ଗଠନ (ଏଫ୍‌ପିଓ) ସ୍ଥାପନ କରି ଓ ଆଧୁନିକ ପ୍ରଯୁକ୍ତି ବ୍ୟବହାର ଦ୍ୱାରା ଜିଲ୍ଲାରେ 'ପରିବା ବିପ୍ଳବ' ଆଣିଛନ୍ତି, ତାହା ନେଇ ମୋଦି ଦେଶବାସୀଙ୍କୁ ଅବଗତ କରାଇଛନ୍ତି। ସେମାନଙ୍କର ଏହି ସଫଳତା ଆଜି ସମଗ୍ର ଦେଶ ପାଇଁ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ ସାଜିଥିବା ସେ ଦର୍ଶାଇଛନ୍ତି।

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ କହିଛନ୍ତି, କଳାହାଣ୍ଡି ଜିଲ୍ଲା ଏକଦା ଦାରିଦ୍ର୍ୟ ଓ ଲୋକଙ୍କ ସ୍ଥାନାନ୍ତରଣକୁ ନେଇ ଚିନ୍ତା କାହାଣୀ କହୁଥିଲା। ଏହି ଜିଲ୍ଲାର ଚାଷୀମାନେ କାମ ଅନ୍ୱେଷଣରେ ବାହାର ରାଜ୍ୟକୁ ଯାଉଥିଲେ। କିନ୍ତୁ ଆଜି କଳାହାଣ୍ଡିର ଗୋଲାମୁଣ୍ଡା ବ୍ଲକ ଏକ ପନିପରିବା ସେଣ୍ଟର ହୋଇପାରିଛି। ଏହା କିଭଳି ସମ୍ଭବ ହେଲା ବୋଲି ମୋଦି ବିସ୍ମୟ ପ୍ରକଟ କରିଛନ୍ତି।

କଳାହାଣ୍ଡିର ଗୋଲାମୁଣ୍ଡା ବ୍ଲକରେ ୧୦ ଜଣ ଚାଷୀଙ୍କୁ ନେଇ ଏକ ଛୋଟ ଗୋଷ୍ଠୀ ଗଠନ ହୋଇଥିଲା। ଏହି ଗୋଷ୍ଠୀ ମିଶି ଆଧୁନିକ ପ୍ରଯୁକ୍ତି ବ୍ୟବହାର କରି ଏକ ଏଫ୍‌ପିଓ ବା କିଷାନ ଉତ୍ପାଦ ସଂଘ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରିଥିଲେ। ଅଳ୍ପ ଦିନରେ ଏହି ଏଫ୍‌ପିଓ କୋଟି କୋଟି ଟଙ୍କାର କାରବାର କରୁଥିବା ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ କହିଛନ୍ତି। ବର୍ତ୍ତମାନ ୨୦୦ରୁ ଅଧିକ ଚାଷୀ ଏହି ସଙ୍ଗଠନ ସହ ସାମିଲ ଅଛନ୍ତି। ଏମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ୪୫ ମହିଳା ଚାଷୀ ରହିଛନ୍ତି।

▶ ଭିତରେ

'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा

समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है संविधान

'সংবিধান আমাদের পথপ্রদর্শক'

মন কি বাত - এ বললেন প্রধানমন্ত্রী

महाकुंभाचा एकच संदेश, एक व्हाल तर एकजूट देश!!

पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांचे 'मन की बात'मधून आवाहन, संविधानच आमचे मुख्य मार्गदर्शक

या विषयांवर बोलले पंतप्रधान

அரசமைப்புச் சட்டமே எப்போதும் வழிகாட்டுகிறது

'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சியில் பிரதமர் மோடி

'பஸ்தர் ஒலிம்பிக்' புதிய புரட்சி

உலகெங்கிலும் தமிழ் கற்போர் அதிகரிப்பு

मन की बात

पीएम मोदी बोले...'संविधान ही हमारा मार्गदर्शक प्रकाश'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात के अपने 117वें और इस साल के आखिरी एपिसोड की शुरुआत संविधान से करते हुए कहा, 'संविधान ही हमारा मार्गदर्शक प्रकाश है। संविधान से ही मैं यहां तक पहुंचा हूं।' पीएम ने बताया कि संविधान की विरासत से जोड़ने के लिए विशेष वेबसाइट (Constitution75.com) बनाई गई है। यहां संविधान को असंख्य भाषाओं में पढ़ सकते हैं और प्रश्न पूछ सकते हैं।

महाकुंभ में तकनीकी प्रयोगों का जिक्र... पीएम ने बताया महाकुंभ के लिए एआइ चैटबॉट व डिजिटल नेविगेशन का जिक्र किया।अगले साल भारत में होने वाले वेव्स (वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंटरटेनमेंट समिट) समिट और बस्तर ओलंपिक की भी चर्चा की।

Constitution stood test of time: PM

During Mann ki Baat, Modi announces launch of special website 'constitution75.com'

RAJESH KUMAR THAKUR @ New Delhi

PRIME Minister Narendra Modi on Sunday hailed the Constitution of India, describing it as a "guiding light" that has "stood the test of time in every sense of the term."

He made these remarks during his monthly radio broadcast programme, "Maan Ki Baat," which focused on the Constitution as the nation prepares to celebrate its 75th year on January 26, recognised as Republic Day.

"On the Janaury 26, 2025, our Constitution is completing 75 years. It is a matter of great honour for all of us. The Constitution, handed over to us by our Constitution-makers, has stood the test of time in every sense of the term," The Prime Minister remarked.

Terming the Constitution the "guiding light" to the country, he said, "The Constitution is our guiding light, our guide. It is on account of the Constitution that I am here today, being able to talk to you".

Modi informed the audience about a special website named 'constitution75.com' created to connect the people with the legacy of Constitution on its 75 years of existence.

He also encouraged the people that the website created on the Constitution of India will help them to read the Preamble of Constitution in myriad languages.

The Prime Minister also dwelt upon the grandeur of Maha Kumbh, which is getting underway from January 13 for next 45 days in Prayagraj. Urging people to "annihilate the feeling of division and hatred in society", he said, "The specialty of Maha Kumbh is not only in its vastness. It also lies in its diversity. Crores of people congregate for this event".

He said the Maha Kumbh should send out a message that the entire country must be united.

For the first time an AI chatbot will assist attendees, providing navigation to ghats, temples, and akharas in 11 Indian languages. He said that the entire areas of Kumbh have been covered with AI-powered cameras. It will help locate their missing kin.

Citing a WHO report, Modi highlighted the 80% reduction in malaria cases and deaths in India from 2015 to 2023. He praised efforts in Assam's Jorhat, where community-driven initiatives have significantly curbed malaria.

Referring to a Lancet study, the PM said the Aayushman Bharat Yojana has enabled 90% of cancer patients to receive timely treatment. "Because of this scheme, poor patients who earlier avoided testing and treatment due to costs are now receiving support", he said.

The PM also highlighted progress of India's creative industries like films and others.

Speaking about WAVES, he said, "India will host the World Audio Visual Entertainment Summit (WAVES), a significant step in making the country a global hub for content creation", he said, adding India's the creator economy is bringing new energy to achieve $5 trillion economy.

The PM also spoke about the 'Bastar Olympics, held for showcasing India's traditions and culture.

FILE PHOTO

Maha Kumbh of unity

Reflecting on how the Kumbh reflects unity in diversity, Prime Minister Narendra Modi said there is no place for any form of discrimination during the festival. "No one is big or small. Such a scene of unity in diversity will not be seen anywhere else in the world. Therefore, the Kumbh is also the Mahakumbh of unity," Modi commented. The Prime Minister also dwelt upon the grandeur of the festival, which is getting underway from January 13 for next 45 days at Prayagraj in Uttar Pradesh.

Kumbh an occasion to foster unity, eliminate hatred: PM

'Digital Aids To Help Visitors Navigate Ghats'

'Ayushman plan a big support for cancer patients'

Series on freedom fighters gets Modi's praise

मोदी के मन की बात का 117वां संस्करण: रफी को युवा पीढ़ी भी शिद्दत से सुनती है, ये कालातीत कला की पहचान: मोदी

हमने मलेरिया के खिलाफ मजबूती से लड़ाई लड़ी

कुंभ की विशेषता इसकी विविधता में है

संविधान के 75 वर्ष गौरव की बात

हर हिंदुस्तानी को तमिल भाषा पर गर्व

अमर उजाला

Mann Ki Baat: पीएम मोदी बोले- हमारा संविधान समय की कसौटी पर खरा उतरा, इसकी वजह से ही मैं यहां तक पहुंचा

भारत EXPRESS

Mann Ki Baat: 'من کی بات' پروگرام کی 117ویں قسط، پی ایم مودی نے مہاکمبھ، آئین اور کھیلوں کا کیا ذکر

दैनिक भास्कर

मन की बात का 117वां एपिसोड: पीएम बोले- महाकुंभ जाएं तो संकल्प लेकर लौटें- समाज से विभाजन और विद्वेष खत्म करेंगे

Devdiscourse

PM Modi Highlights India's Landmark Progress in Health and Unity Initiatives

ETV بھارت

من کی بات میں وزیراعظم مودی نے کہا، 'آئین ہمارے لیے گائڈنگ لائٹ' - MANN KI BAAT

Hindustan Times

Kumbh showcases our unity in diversity: Modi

INDIA न्यूज़

PM Modi Highlights India's global achievements and cultural radiance in 117th episode of 'Mann Ki Baat'

KRISHI JAGRAN

PM Modi Highlights Ayurveda's Growing Global Presence in 117th Episode of Mann Ki Baat

LATESTLY

Mann Ki Baat 117th Episode: PM Narendra Modi Launches Campaign to Celebrate 75 Years of Constitution Adoption, Urges Citizens to Read Preamble

theSun

"Raj Kapoor introduced world to India's soft power through films": PM Modi in Mann Ki Baat

منصف

PM Modi Launches Nationwide Campaign to Celebrate 75 Years of India's Constitution

NEWS18 हिंदी

'Constitution Our Guiding Light, Stood Test Of Time': PM Modi In Year's Last 'Mann Ki Baat'

news nine

'Our Constitution is our guiding light', says PM Modi in 2024's last 'Mann Ki Baat'

सुदर्शन NEWS

PM Modi Launches Constitution75.com to Engage Citizens

THE HINDU

PM Modi announces a series of events in 75th year of Indian Constitution

The Sentinel

Let us Eliminate Division, Hatred in Society: PM Narendra Modi

The Statesman

PM Modi's 'Mann Ki Baat' celebrates Mohammed Rafi & Raj Kapoor

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार